समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

शक्ति संवर्धन वर्ष

16 दिसम्बर 2018

वर्ष : 31, अंक : 12
प्रकाशन स्थल : शांतिकुंज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 12 दिसम्बर 2018
वार्षिक चंदा : ₹ 60/-
वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 800/-
प्रति अंक : ₹ 3/-
ई-मेल : news@awgp.org
news.shantikunj@gmail.com

RNI-NO.38653/ 80 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2018-20 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2018-20

पूरे देश में लोकप्रिय हो रहा है आन्दोलन- आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी 4

शक्ति संवर्धन गायत्री महायज्ञों ने जगाई आध्यात्मिक जीवन ज्योति 6

गायत्री चेतना केन्द्र मोडासा के लोकार्पण से हुआ नई ऊर्जा का सचांर 7

अश्वमेध शक्तिकलश पूजन के साथ मुंम्बई- मंथन आरंभ 8

शक्ति संवर्धन वर्ष

हम इतना तो कर ही सकते हैं

परम पूज्य गुरुदेव के सतयुगी संकल्पों को साकार करने की हूक हम सबमें है। लक्ष्य महान है और उसके अनुपात में अभी हमें बहुत बड़ा काम करना है। भगवान के साथ साझेदारी करने की इस ऐतिहासिक पुण्य वेला में हर कोई तो अंगद और हनुमान जैसी भूमिका नहीं निभा पाता, लेकिन नन्हीं गिलहरी जैसा योगदान तो दे ही सकता है।

परम पूज्य गुरुदेव ने हर वर्ष एक से पाँच और पाँच से पच्चीस लोगों तक युग चेतना विस्तार का सूत्र दिया है। इतनी गति से आज हम लोगों के व्यक्तित्व और विचारों को नहीं बदल पा रहे हों तो क्या, हम मुर्गे की तरह बाँग तो दे सकते हैं। प्रज्ञा अभियान के सहारे, जिसकी एक प्रति की कीमत मात्र 2.50 रुपये और वार्षिक चंदा 60 रु. है, हर वर्ष पाँच-पाँच लोगों तक अपने मिशन को अपनी ओर से पहुँचा सकते हैं। पावन गुरुसत्ता के आश्वासन के अनुरूप शेष कार्य उनकी सूक्ष्म चेतना कर लेगी।

> हर कोई अंगद-हनुमान जैसी भूमिका नहीं निभा पाता, लेकिन नन्हीं गिलहरी जैसा योगदान तो दे ही सकता है।

शक्ति संवर्धन वर्ष के इस विशिष्ट सफल और लोकप्रिय प्रयोग में हर परिजन की भागीदारी अवश्य होनी चाहिए। हर परिजन अपनी ओर से पाँच-पाँच पड़ोसी-मित्रों तक प्रज्ञा अभियान पहुँचाये, जनसंपर्क बढ़ाये। यह अभियान अपने हर आन्दोलन को सुनिश्चित गति देगा।

- एक पते पर न्यूनतम 25 प्रज्ञा अभियान मँगायें।
- संगठन-शक्तिपीठें विशेष जिम्मेदारी निभाएँ। हर गाँव-मुहल्ले में मिशन को पहुँचाने की योजना बनायें। हर जिले में कम से कम 1000-1000 प्रज्ञा अभियान तो इसी वर्ष से आरंभ कर दिये जाने चाहिए।
- यथाशीघ्र सदस्य बन जायें, ताकि 1 जनवरी 2019 से ही यह अभियान हर क्षेत्र में चल पड़े।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क कीजिए- 9258369413

एकमासीय युगशिल्पी प्रशिक्षण

यही समय उपयुक्त है

मिशन के निरंतर हो रहे विस्तार को देखते हुए विभिन्न शिविरों में शिविरार्थियों की संख्या भी बढ़ती जा रही है। देखा गया है कि अधिकांश लोग ग्रीष्मकाल में शिविर के लिए आते हैं। उन दिनों संख्या अधिक होने से साधना और शिक्षण की गुणवत्ता निश्चित रूप से प्रभावित होती है।

जो लोग शांतिकुंज में एक मासीय युगशिल्पी सत्र करना चाहते हैं, उनके लिए यह शीतकाल ही सर्वोत्तम समय है। जनवरी से मार्च तक के महीनों में शिविरार्थियों की संख्या सीमित होने से व्यक्तिगत रूप से ध्यान दे पाना संभव होता है, अभ्यास का अधिक अवसर मिलता है।

अतः निवेदन है कि जो लोग इन दिनों युगशिल्पी शिविर कर सकते हैं, वे ग्रीष्मकाल में नहीं, इन्हीं दिनों करें। शाखा-शक्तिपीठों से भी निवेदन है कि वे अपनी माँग के अनुरूप युगशिल्पी गढ़ने हेतु श्रद्धावानों को इन्हीं दिनों शांतिकुंज भेजें। तत्काल आवेदन के लिए संपर्क करें : **9258369485**

स्वयं बदलें-प्रवाह को उलटें

युगऋषि की आकांक्षा

यह परिवर्तन का महान पर्व है। तमिस्रा के पलायन और दिनमान के ऊर्जा विस्तार का यह मध्यवर्ती प्रभात है। इन दिनों महाकाल की गलाने और ढालने वाली भट्ठी प्रचण्ड दावानल की तरह गगनचुम्बी होती जा रही है। इसके प्रभाव से वर्तमान प्रचलनों की अवांछनीयता अगले दिनों ठहर न सकेगी। उसके स्थान पर आदर्शवादी उत्कृष्टता को सिंहासनारूढ़ होने का अवसर मिलेगा।

इस प्रभात परिवर्तन का प्रथम दर्शन पर्वत शिखरों पर दृष्यमान किरणों की तरह होना चाहिए। युग परिवर्तन का शुभारम्भ प्रज्ञा परिजनों के दृष्टिकोण निर्धारण एवं क्रिया में आलोक भरने के रूप में होना चाहिए। अग्रगामी युगसृजेताओं को रास्ता दिखाना ही नहीं, बनाना भी है। यदि वह रास्ता सही दिशा में जाता होगा और सीधा होगा तो उस पर चलने वाली भीड़ की कमी न रहेगी।

युग सृजन में प्रमुख भूमिका उनकी होगी जो आगे चलेंगे, अर्थात् अपने व्यक्तित्व और प्रयास में ऐसी आदर्शवादिता भर देंगे, जिसे देखकर उसके अनुकरण का साहस जन-जन में उभरे। उन्हें इस प्रकार का साँचा बनना है, जिससे सटने वाले ठीक उसी तरह के बनते चले जायें। कठिन तो आरंभ ही होता है। ढर्रा चल पड़े तो बड़े-बड़े उद्योगों को मुनीम, गुमाश्ते भी चलाते रहते हैं।

प्रवाह से प्रभावित न हों

इस सन्दर्भ में प्रथम निर्धारण यह है कि लोकप्रवाह से तनिक भी प्रभावित न हुआ जाये। लोगों को अन्धी भेड़ों की मण्डली भर समझा जाय और यह मानकर चला जाय कि अपनी विशिष्ट सत्ता इसका मार्गदर्शन करने के लिए हुई है। पथ प्रदर्शक अपनी स्वतंत्र सूझ-बूझ का परिचय देते हैं। उन्हें उथले परामर्श दाताओं की उपेक्षा ही करनी पड़ती है। भटके लोग तो दूसरों को भटका ही सकते हैं।

मानकर चलना होगा कि नित्यकर्म, निर्वाह क्रम के सामान्य लोकव्यवहार को छोड़कर प्रज्ञा परिजनों को अपनी आकांक्षा, विचारणा, कार्यविधि, आदतें लगभग इस प्रकार बदलनी चाहिए, जिसे व्यक्तित्व का कायाकल्प कहा जा सके। गीता में योगी के लक्षण बताते हुए कहा है कि वे दिन में सोते और रात में जागते हैं। अर्थात् सामान्य जनों से अपनी गतिविधियाँ भिन्न प्रकार की बनाते हैं।

लोगों के दृष्टिकोण, जीवनक्रम एवं प्रयास का शवच्छेद किया जाय तो उनमें से अधिकांश रावण, कुम्भकर्ण, मारीच, कंस, दुर्योधन, जरासंध, हिरण्यकश्यपु वृत्रासुर, भस्मासुर के भाई-भतीजे दिखाई पड़ेंगे। अन्तर इतना ही है कि वे योग्यता एवं समर्थता के अभाव में मनचीती कर नहीं पाते, पर रीतिनीति उनकी उसी स्तर की है। शूर्पणखा, ताड़का, त्रिजटा, सुरसा, पूतना, मन्थरा घर-घर में विराजमान हैं। अन्तर साधन और अवसर न मिल पाने जितना है।

इन लोगों के बीच रहते हुए भी कमल-पत्र की नीति बनानी चाहिए। सुदामा, केवट,

हनुमान, भगीरथ जैसों का अनुकरण करने में घाटा नहीं सोचना चाहिए। कौशल्या, सुमित्रा, उर्मिला, कुन्ती, मदालसा, मीरा, संघमित्रा का रास्ता अपनाने में कोई घाटा नहीं है। पिछला जीवन उथला रहा हो तो भी भविष्य का उज्ज्वल निर्धारण करने में कोई अड़चन नहीं। वाल्मीकि, अंगुलिमाल, विल्वमंगल, अजामिल जैसे बदल सकते हैं। आम्रपाली, वासवदत्ता की कथाएँ बताती हैं कि सामान्य स्तर से गई-गुजरी नारी भी आंतरिक परिवर्तन होने पर विश्व विभूति बन सकती है। आदर्शवादी परिवर्तन के लिए जीवन का हर क्षेत्र, संसार का हर कोना खुला पड़ा है।

अपनी जीवन शैली बदलें

सर्वप्रथम अपने समय और खर्च को कसना चाहिए। औचित्य की सीमा समझी जाय और उपभोग, संचय, व्यामोह, खुशामद की अभ्यस्त आदतों को उलट दिया जाय तो अगले ही दिन अभ्यस्त ढर्रा-रवैया बदलने लगेगा। मनःस्थिति न परावलम्बियों जैसी रहेगी, न दीन-दयनीयों जैसी। आत्मबोध उभरते ही प्रतीत होगा कि न केवल निर्वाह के साधन पर्याप्त हैं, वरन् देने के लिए भी विपुल वैभव अपने पास विद्यमान है। धन न सही समय, श्रम, प्रभाव, प्रतिभा की दृष्टि से भगवान ने किसी को भी दरिद्र नहीं बनाया। इन्हें बर्बादी से बचाने के उपरान्त हर व्यक्ति इस स्थिति में होगा कि वह समाज और संस्कृति को बहुत कुछ दे सकेगा। असंख्यों को रास्ता बताने में लाल मशाल हाथ में लिए आगे-आगे चल सकेगा।

लोग कुरीतियों के अभ्यस्त हैं। हम क्यों उनका अनुसरण करें? लोग अन्धाधुन्ध बच्चे जनते हैं, उनके लिए कुबेर-वैभव जुटाने की बात सोचते हैं। हम क्यों न अपने बालकों को श्रमजीवी एवं सृजन-सहयोगी बनायें? शादियों में पैसे की होली फूँकने की जरूरत क्या है? ठाठ-बाट का, अमीरी का खर्चीला स्वांग क्यों किया जाय?

लोगों की आदतें बिगड़ गई हैं। वे चटोरेपन में लिप्त रहकर खोखले बनते जा रहे हैं। हमें वैसा करने की क्या पड़ी है? लोगों की अनीति उपार्जन और संचय-अपव्यय में उसका समापन करने की आदत है, हम क्यों वैसा करें? लोग नशा पीते हैं। अभक्ष्य खाते हैं, दुर्व्यसनों में डूबे, कुकर्म करते रहकर जिंदगी के दिन काटते हैं। क्या स्वजन-सम्बन्धी होने के नाते इन्हीं का दबाव माना और इन्हीं का अनुसरण किया जाय?

मूढ़ मान्यताओं में जकड़े, अनाचारों से अभ्यस्त कुचक्री षड्यंत्ररत लोगों को न हमारा परामर्श दाता होना चाहिए, न सूत्र-संचालक, न नेता। भले ही वो अपनी चतुरता के कारण बड़े लोगों में गिने जाने लगे हों। कोई ब्राह्मण वंश में जन्मा है या साधुवेष धारण करता है, अधिक पढ़ा है या पदाधिकारी बन गया है। इनमें से एक भी ऐसा कारण नहीं है जिससे इन्हें नीति निर्धारक माना जा सके।

इस अज्ञान, अन्धकार, अनाचार और दुराग्रह के माहौल से हमें समुद्र में खड़े स्तम्भों की तरह एकाकी खड़े होना चाहिए। भीतर का ईमान, बाहर का भगवान यदि इन दो को मजबूती से पकड़ें और विवेक तथा औचित्य के दो पग बढ़ाते हुए लक्ष्य की ओर एकाकी आगे बढ़े तो इसमें सच्चा शौर्य, पराक्रम है। भले ही लोग उपहास उड़ायें या असहयोगी, विरोधी रुख बनाये रहें।

युग परिवर्तन में जिस सतयुग के अवतरण का लक्ष्य है, उसे प्रज्ञा परिजन सर्वप्रथम आत्मसत्ता में अवतरित करें। एक जलता दीपक असंख्यों को जला देता है, इस तथ्य पर विश्वास करें। स्वयं बदलें-प्रवाह को पलटें और पराक्रमी युग प्रवर्तकों की अग्रिम पंक्ति में खड़ें हों। यही है समय की माँग और आत्मा की पुकार, जिसे कोई प्राणवान अनुसुनी न करे।

युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य । वाङ्मय-28 'सूक्ष्मीकरण एवं उज्ज्वल भविष्य-1', पृष्ठ 8.11 से संकलित, संपादित

युगऋषि द्वारा प्रज्ञा परिजनों के लिए निर्धारित प्रतिबन्ध-अनुशासन

मर्यादाओं को पालें, वर्जनाओं से बचें, प्रामाणिकता-सदाशयता बनाये रखें

पूर्व संदर्भ

भगवान, मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम ने चौदह वर्ष के वनवास की अवधि पूरी करके, लंका विजय करके लौटने पर, अपने राजतिलक के समय कहा था-

मम सेवक प्रियतम मम सोई।
मम अनुशासन मानइ जोई।।

अर्थात्- मेरा सबसे प्रिय और सच्चा सेवक वही है जो मेरा अनुशासन मानता है।

यही भाव युगऋषि पं.श्रीराम शर्मा आचार्य भी समय-समय पर व्यक्त करते रहें हैं। उनके निर्देश पर युग निर्माण अभियान में भागीदारी निभाने वाले परिजनों को भी उनका विशेष स्नेह और अनुग्रह पाने के लिए उनके द्वारा निर्धारित अनुशासनों का श्रेष्ठतर अभ्यास करने का मार्ग अपनाना चाहिए।

वे सदैव यह कहते रहते थे कि ''**मैं शरीर नहीं, एक प्रखर विचार हूँ। मैं व्यक्ति नहीं, शक्ति की भूमिका में हूँ।**'' उनके सशरीर उपस्थित न रहने पर भी उनके अनुशासन पर चलते हुए जो परिजन प्रयास-पुरुषार्थ करते रहे हैं, उन्हें उनके विशेष अनुदानों का लाभ मिलता रहा है।

मथुरा से विदाई के समय लोगों को यह भय लग रहा था कि गुरुवर की अनुपस्थिति में हमारा सहारा क्या होगा? माया के प्रभाव में पड़कर गलत राह पर तो नहीं चल पड़ेंगे? इस प्रकार के भयों का निराकरण करते हुए युगऋषि ने कुछ विशेष प्रतिबंध-अनुशासन घोषित किए थे। वे आज के समय में भी बहुत प्रासंगिक हैं। यदि उनको ध्यान में रखा जाय और उनका पालन निष्ठापूर्वक किया जाय तो तमाम विकृतियों से बचाव और तमाम चुनौतियों को पार करना संभव हो सकता है। इस आलेख में उनके द्वारा निर्दिष्ट प्रतिबन्धों-अनुशासनों को मूलभाषा में यथावत प्रस्तुत करते हुए वर्तमान परिस्थितियों के अनुरूप समीक्षात्मक चिन्तन भिन्न टाइप में दिया जा रहा है। नैष्ठिक परिजन इन्हें ध्यान से पढ़ें-पढ़ायें, उनका अनुपालन-अभ्यास करें-करायें तो अभियान को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने और ऋषिसत्ता के अनुग्रह से उच्च आध्यात्मिक सफलता पाने के दुहरे लाभ सहज ही मिल सकते हैं।

1. संगठन

मूल निर्देश : युग निर्माण आन्दोलन के सदस्य और हर शाखा का सीधा सम्बन्ध केन्द्र से रहे। क्षेत्रीय-प्रान्तीय संगठन अलग से खड़े न किए जायें, परस्पर सहयोग करना दूसरी बात है पर ऐसे मध्यवर्ती संगठन आमतौर से व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति और केन्द्र से प्रतिद्वन्द्वता करने के लिए ही बनते हैं। इन प्रयासों को पूर्णतया निरुत्साहित किया जाय। केन्द्र को हम इतना समर्थ बनाये जा रहे हैं, भविष्य में बनाते रहेंगे कि वह भारत का ही नहीं, समस्त विश्व का एक स्थान से समुचित सूत्र-संचालन कर सके।

सामयिक समीक्षा : *तब की अपेक्षा अब मिशन के परिजनों, सैनिकों की संख्या कई गुनी बढ़ गयी है। संगठन का व्यवस्थित तंत्र बनाने के लिए गुरुदेव ने संगठन की मूल इकाई के रूप में प्रज्ञा मण्डल (पुरुषों, महिला एवं युवाओं के अलग-अलग या संयुक्त) की रूपरेखा दी। उन्हें प्रामाणिक और सक्रिय बनाये रखने के लिए सक्रिय संगठित समूहों, प्रज्ञा केन्द्रों, प्रज्ञापीठों, शक्तिपीठों का स्वरूप दिया गया। पीठों से जुड़े ट्रष्टियों, विभिन्न समितियों के समन्वयकों, जिलों एवं उपजोन-जोन समन्वयकों का काम मण्डलों को प्रोत्साहित करना, प्रेम से अनुशासनों तथा विभिन्न कौशलों का प्रशिक्षण देना है। यदि आपसी राग-द्वेष के कारण वे प्रशिक्षण एवं समन्वय के लिए तैयार नहीं होते तो केन्द्र की सहायता से उन्हें मार्ग पर लाने के प्रयास किए जाने चाहिए।*

युगऋषि कहते रहे हैं कि बड़े कार्य के लिए संगठित प्रयास जरूरी हैं। इसलिए हम संगठन अवश्य बनायेंगे, किन्तु वह संस्थागत ढंग से नहीं, परिवारगत अनुशासन से चलेगा। संस्थागत प्रक्रिया में पदों की आपाधापी और शक्ति-साधनों की छीना-झपटी शुरू हो जाती है। इससे लोगों की व्यक्तिगत अहंता और महत्त्वाकांक्षाओं को प्रधानता मिलने लगती है और सामूहिक सहकारिता, सद्भावना की अनदेखी होने लगती है। पारिवारिक प्रक्रिया भावप्रधान होती है। परिवार के समर्थ व्यक्ति छोटों, अविकसित बालकों और शक्तिहीन वृद्धों को विकसित करने और संतुष्ट करने को ही सामर्थ्य की सफलता मानते हैं।

संगठन की रीतिनीति में यह बात स्पष्ट रूप से निर्दिष्ट है कि कोई किसी का अधीनस्थ नहीं, कोई भी किसी का सहयोगी बन सकता है। इस अनुशासन के प्रभाव से परस्पर के राग-द्वेष और महत्त्वाकांक्षी व्यक्तियों के अहंकार आदि से होने वाली हानियों से संगठन को बचाया जा सकता है। यह अनुशासन आंशिक रूप से ही सध रहा है। इस दिशा में गहन आत्मसमीक्षा के साथ कुछ बेहतर करना जरूरी है।

2. गुरुदीक्षा

मूल निर्देश : समर्थ गुरुदीक्षा दे सकने योग्य अभी कोई अपना अनुचर हम नहीं छोड़ सके हैं। असमर्थ व्यक्ति यह महान उत्तरदायित्व अपने कन्धों पर उठावेंगे तो उनकी कमर टूट जायेगी और जो उनका आश्रय लेगा वह डूब जायेगा। इसलिए भविष्य में गायत्री मंत्र की गुरुदीक्षा लेनी आवश्यक हो तो लाल मशाल के प्रतीक को ही गुरु बनाया जाय। उस संस्कार संकल्प को कोई भी व्यक्ति करा सकेगा, पर वह स्वयं गुरु न बनेगा।

सामयिक समीक्षा : *गुरुदेव ने इस संदर्भ में अद्भुत व्यवस्था बनायी है। अब तक के इतिहास में यही पाया गया है कि कोई समर्थ गुरु अपने बाद दीक्षा देने का अधिकार किसी एक या गिने-चुने समर्थ शिष्यों को दे जाते थे। लेकिन युगऋषि ने यह व्यवस्था दी कि उनके प्रतीक लाल मशाल को गुरुसत्ता का प्रतीक मानकर कोई भी स्वयंसेवक के रूप में दीक्षा संस्कार का कर्मकाण्ड करा सकता है।*

युगऋषि स्वयं व्यक्तिवाचक संज्ञा से ऊपर उठकर गुणवाचक, भाववाचक स्थिति में पहुँच गये थे। उन्होंने 'अपने अंग-अवयवों से' नामक पत्रक में लिखा है कि ''आप सबकी संयुक्त शक्ति का नाम ही वह व्यक्ति है जो यह पंक्तियाँ लिख रहा है।'' आत्माओं का समुच्चय ही परमात्मा है। वे परमात्मचेतना के साथ एकरूप हो चुके थे। इसीलिए सूक्ष्म जगत में ऐसी समर्थ व्यवस्था बना सके कि किसी भी स्वयंसेवक द्वारा संचालित दीक्षा कर्मकाण्ड के परिणाम भी उसी स्तर के निकल रहे हैं, जैसे उनके द्वारा सशरीर दी जाने वाली दीक्षा के होते थे।

इस संदर्भ में यह सूत्र ध्यान देने योग्य है। 1.दीक्षा गायत्री महाविद्या की कही जायेगी। 2. वेदमाता-देवमाता गायत्री को विश्वमाता के रूप में सबके लिए सुलभ बनाने वाले इस युग के विश्वामित्र वेदमूर्ति तपोनिष्ठ युगऋषि पं. आचार्य श्रीराम शर्मा इस विधा के आचार्य हैं। श्रद्धालुओं को उन्हीं की सूक्ष्म एवं कारणसत्ता का संरक्षण प्राप्त रहेगा और उन्हीं के प्राण, तप एवं पुण्य के अंश ही श्रद्धालुओं में दिव्य चेतना की कलम लगाने जैसे चमत्कारी परिणाम उत्पन्न करेंगे।

3. सम्मेलन-यज्ञ :

मूल निर्देश : युग निर्माण सम्मेलन कितने ही विशाल क्यों न ही किए जायें, पर उनके साथ जुड़े हुए गायत्री यज्ञ आमतौर से 9 कुण्ड से बड़े न किए जाने चाहिए। जहाँ कोई विशेष कारण हो, अधिक बड़ा यज्ञ करना अनिवार्य हो तो उसे माता भगवती देवी की विशेष स्वीकृति से ही किया जाय। बड़े यज्ञों के जहाँ बड़े लाभ हैं, वहाँ उनमें बड़ी गड़बड़ियाँ भी देखी गई हैं। इसलिए यह थोड़े कुण्डों का मध्यवर्ती मार्ग अपनाना ही दूरदर्शितापूर्ण है।

सामयिक समीक्षा : *यज्ञायोजनों के पीछे पूज्य गुरुदेव के कुछ सुनिश्चित उद्देश्य रहे हैं, जैसे -1.यज्ञीय ज्ञान एवं विज्ञान को लुप्त होने से बचाकर जनोपयोगी बनाना। 2. यज्ञायोजनों के माध्यम से जीवन के यज्ञीय अनुशासनों का जनसामान्य को परिचय एवं प्रशिक्षण देना। 3.यज्ञों के साथ जन सम्मेलन करके ज्ञानयज्ञ के माध्यम से विचार क्रान्ति का विस्तार करना।*

सामूहिक यज्ञायोजनों से उक्त उद्देश्यों की पूर्ति होती रहती है, किन्तु उनमें खर्चा भी अधिक होता है तथा अनेक विसंगतियाँ भी होने लगती हैं। इसलिए पूज्य गुरुदेव ने अन्ततः समाज को यज्ञीय प्रेरणाएँ देने के लिए दीपयज्ञों सहित सम्मेलनों की परिपाटी चलाने का निर्देश दिया। दीपयज्ञों द्वारा यह उद्देश्य कुण्डीय यज्ञों की अपेक्षा अधिक प्रभावी ढंग से सम्पन्न होते हैं। कुण्डीय यज्ञों को केवल सामूहिक साधनाओं की पूर्णाहुति के रूप में साधकों द्वारा अपने ही साधनों द्वारा सम्पन्न करने की मर्यादा वे स्थापित कर गए हैं। इन अनुशासनों को ध्यान में रखकर चलने से अवांछनीय प्रतिक्रियाओं से बचते हुए यज्ञीय जीवन दर्शन का लाभ जन-जन तक पहुँचाया जा सकेगा।

4. यज्ञाचार्य आदि पद

मूल निर्देश : यज्ञाचार्यों का अलग पद न रहे। युग निर्माण सम्मेलनों सहित जो यज्ञ होंगे, उनका सूक्ष्मरूप में हम संरक्षण करेंगे। फिर इसके लिए किसी यज्ञाचार्य-ब्रह्मा आदि की जरूरत न रहेगी। जिन्हें विधि-विधान ठीक तरह आते हों, उनमें से कोई भी उस कृत्य को प्रसन्नतापूर्वक करा सकता है।

सामयिक समीक्षा : यह परिपाटी ठीक से चल पड़ी है। गुरुसत्ता के संरक्षण में शुद्ध भावना वाले स्वयंसेवकों के टूटे-फूटे मंत्रों से कराये जाने वाले यज्ञ भी सफल होते रहे हैं। सामान्य स्वयंसेवक भी आश्वमेधिक पुरोहित के स्तर तक पहुँच गये हैं। किन्तु युगऋषि के प्रतिनिधि रूप में कार्मकाण्ड संचालन के दायित्व ठीक से निभाने के लिए विशेष जप-तप करके, आत्मशुद्धि कराते रहने, लोकभावनाओं को छू सकने योग्य मानसिक निर्मलता बनाये रखने की साधना विशेष रूप से करते रहना चाहिए।

5. शोभायात्रा-जुलूस आदि

मूल निर्देश : जलयात्रा, विसर्जन आदि के जुलूसों में गायत्री माता, लाल मशाल के प्रतीकों को ही सुसज्जा के साथ निकाला जाय। व्यक्तियों का जुलूस न निकले। इस प्रतिबन्ध से अनावश्यक अहंकार एवं ईर्ष्या, द्वेष को प्रश्रय न मिलेगा।

सामयिक समीक्षा : *इस प्रतिबंध का मुख्य उद्देश्य अपने कार्यकर्त्ताओं को अहंकार के विष से बचाना, उसके कारण उभरने वाले इर्ष्या-द्वेष को पनपने से रोकना रहा है। स्थूल रूप में तो इस प्रतिबन्ध का पालन हो रहा है, किन्तु साधना-स्वाध्याय की कमी के कारण कुछ लोग लोकेषणा के मायावी कुचक्र में फँसते देखे गये हैं। इससे संगठन में जो विसंगतियाँ उभरती ही हैं, उन्हें तो अन्य समझदार-प्रभावशाली परिजन बहुधा सँभाल भी लेते हैं, किन्तु लोकेषणाग्रस्त, भटके हुए साधक अपने पतन के कारण स्वयं बन जाते हैं। इस दिशा में भी विशेष जागरूकता बरतने की जरूरत है।*

6. वरदान-आशीर्वाद का क्रम

मूल निर्देश : आशीर्वाद-वरदान देने-माँगने का सिलसिला व्यक्तिगत रूप से न चलाया जाय। ईश्वर और व्यक्ति के बीच में मध्यस्थ न बनें। जिनमें सामर्थ्य नहीं है वे यदि वरदान-आशीर्वाद का सिलसिला चलाते हैं तो यह ठगी ही होगी। हमारे अनुयायियों में से कोई ऐसा मिथ्या प्रलोभन लोगों को देकर उन्हें भ्रमित करने का प्रयत्न न करे।

सामयिक समीक्षा : *भारत के भोले भावनाशील लोगों से लेकर कथित बड़े प्रभावशाली व्यक्ति भी अपनी कष्ट-कठिनाइयों को दूर करने और मनोकामनाएँ पूरी करने के लिए संतों-साधकों से आशीर्वाद माँगते हैं। जनता की इस कमजोरी का अनुचित लाभ उठाने के लिए चालाक लोग साधु-संतों का आडंबर भी बनाते हैं। इस दुष्प्रवृत्ति के भयंकर दुष्परिणाम आये दिन उजागर होते रहते हैं।*

इस आकर्षक, लेकिन विनाशकारी प्रलोभन से अपने परिजनों को बचना ही चाहिए। स्वार्थी व्यक्तियों से तो अपनी असमर्थता दिखाकर पीछा छुड़ा लेना चाहिए। सुपात्रों को प्रभु प्रार्थना एवं साधना द्वारा प्रारब्ध कर्मों से उबरने की सलाह देना चाहिए। स्वयं भी प्रार्थना करने का आश्वासन दिया जा सकता है। उनका काम सध जाने पर इसे प्रभुकृपा-गुरुकृपा कहकर स्वयं के अहंकार से बचना चाहिए। गुरुदेव भी अधिकतर यही शैली अपनाते थे।

7. दान-दक्षिणा

मूल निर्देश : व्यक्तिगत रूप से कोई दान-दक्षिणा न ले। जिन्हें आवश्यकता है, वे संघ के माध्यम से लें और जिन्हें देना हो वे व्यक्ति को न देकर संघ को दें। इस प्रथा से भिक्षावृत्ति, परिग्रह, दीनता, तंगी आदि अनेक दुष्प्रवृत्तियाँ पनपने से रुक जायेंगी।

सामयिक समीक्षा : *लोक श्रद्धापूर्वक जो दान देते हैं, उन्हें लोकमंगल के उद्देश्यों में ही लगाया जाना चाहिए। व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए दान लेने की परम्परा ने ही लोकसेवियों को श्रद्धा के पात्र के स्थान पर दया का पात्र बनाया है और उनकी साधना-सदाशयता पर प्रश्नचिह्न लगाये हैं। उक्त अनुशासन को मानकर चलने से लोकसेवियों की प्रामाणिकता बनाये रखकर भी उनके निर्वाह की व्यवस्था सहज ही की जा सकती है। इस अर्थ प्रधान युग में अर्थानुशासन के इस सूत्र को विशेष जागरूकता के साथ अपनाया जाना चाहिए।*

गुरुसत्ता द्वारा निर्धारित निर्देशों का पालन करने से पजिनों की जीवन्तता-प्रामाणिकता निरंतर बढ़ती रहेगी।

युगसृजेताओं के नैष्ठिक प्रयासों से पूरे देश में लोकप्रिय हुआ अभियान

आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी

केरल में दस्तक

आईएमए कालीकट ने कार्यशाला आयोजित की

इण्डियन मेडिकल एशोसिएशन कालीकट तथा श्रेष्ठाचार सभा द्वारा आयोजित 'गर्भ संस्कारम' कार्यशाला में भाग लेते चिकित्सक गण

'आओ गढ़ें संस्कार वान पीढ़ी' अभियान के अंतर्गत इण्डियन मेडिकल एशोसिएशन कालीकट तथा श्रेष्ठाचार सभा के आचार्य श्री एम टी विश्वनाथन द्वारा केरल प्रदेश में पहली बार 'गर्भोत्सव संस्कारम' कार्यशाला आयोजित की गई। 18 नवम्बर 2018 को आयोजित इस कार्यक्रम में150 डॉक्टर्स ने भाग लिया। इस अभियान की प्रभारी शांतिकुंज प्रतिनिधि डॉ. गायत्री शर्मा एवं डॉ. ओ.पी. शर्मा ने इसे संबोधित किया।

150 चिकित्सकों ने भाग लिया
आम जनसभा में शामिल हुए 500 लोग

सभी डॉक्टर्स संस्कारवान पीढ़ी के नवनिर्माण के अभियान में भागीदार बनने के लिए उत्साहित हुए। उन्होंने अप्रैल 2019 में शांतिकुंज में आयोजित होने वाले विशेष शिविर में भागीदारी करने का आश्वासन दिया।

इसी विषय पर एक कार्यक्रम 18 नवम्बर की सायं चिन्मया विद्यालय, थोण्डयाडू जंक्शन, कोझिकोड में आम लोगों के बीच रखा गया। इसमें 500 से अधिक मलयाली और हिन्दी भाषी परिजनों नें भाग लिया। डॉ. गायत्री शर्मा ने गर्भ संस्कार के महत्त्व, उसकी वैज्ञानिकता पर प्रकाश डाला। हिन्दी से मलयालम भाषा में भाषांतर का कार्य श्री ज्योतिष प्रभाकरन ने किया।

श्री उमेश कुमार शर्मा जी एवं प्रशान्ति शर्मा जी ने गायत्री परिवार के अन्य रचनात्मक कार्यक्रमों से जुड़ने की प्रेरणा दी।

गर्भोत्सव प्रशिक्षक-प्रशिक्षण कार्यशाला

कानपुर। उत्तर प्रदेश

200 लोगों को प्रशिक्षण दिया
सात प्रशिक्षक टोलियाँ गठित हुईं

'आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी' अभियान के अन्तर्गत गायत्री शक्तिपीठ कानपुर में दो दिवसीय प्रशिक्षक-प्रशिक्षण कार्यशाला सम्पन्न हुई। इसमें कानपुर नगर के 200 भाई-बहिनों ने भाग लिया। कार्यशाला में विभिन्न संस्कारों की चर्चा के साथ-साथ गर्भोत्सव संस्कार पर विशेष प्रकाश डाला गया। गर्भकाल में क्या-क्या सावधानी आवश्यक है, खान-पान, दिनचर्या आदि कैसे हो जिससे गर्भस्थ शिशु का शारीरिक, मानसिक सभी तरह से विकास हो सके, इसके धार्मिक, वैज्ञानिक आदि कई पहलुओं पर विवेचना की गई। साथ ही इस सम्बन्ध में सम्यक प्रशिक्षक तैयार करने के लिए बहिनों की सात टीमें गठित कर उन्हें प्रशिक्षण दिया गया।

कार्यशाला के समापन अवसर पर डॉ. अमरनाथ सारश्वत ने इस अभियान को अधिकाधिक व्यापक बनाने का आग्रह किया। इसके आयोजन में डॉ. संगीता सारश्वत के साथ बहिन सुमन बाला शर्मा, प्रज्ञा सक्सेना, अर्चना तिवारी, सुमन लता त्रिवेदी आदि बहिनों ने सहयोग किया।

कानपुर के प्रशिक्षक-प्रशिक्षण सत्र में भाग लेती बहिनें

मुम्बई और आसपास में समर्पित चिकित्सकों-कार्यकर्त्ताओं की प्रशंसनीय सेवाएँ

बदलापुर, ठाणे। महाराष्ट्र

18 नवम्बर को 'आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी' अभियान के अंतर्गत कटदरे हॉल, गाँधी चौक, बदलापुर में डॉक्टर्स, गर्भवती बहिनों और अभियान में रुचि रखने वाले परिजनों की कार्यशाला हुई। उमा शर्मा-रिटायर्ड मेडिकल फिज़िसिस्ट, गवर्नमेण्ट मेडिकल कॉलेज नागपुर, डॉ. अनिता शरण-पैथोलॉजिस्ट, डॉ. वरुण मानेक-डेंटल रेडियोलॉजिस्ट एवं शुचिता शेट्टी-प्रबंधन प्राध्यापक ने पावर पॉइण्ट प्रेज़ेण्टेशन के माध्यम से बड़ी कुशलता के साथ उनका मार्गदर्शन किया। कार्यक्रम का संयोजन एवं संचालन श्रीमती जयश्री शिंपी, बदलापुर ने किया। कार्यक्रम की सफलता में घाटकोपर शाखा के डॉ. प्रजापति एवं भिवंडी शाखा के कार्यकर्त्ताओं का विशेष योगदान रहा।

अंधेरी, मुम्बई। महाराष्ट्र

अंधेरी में गीता शर्मा एवं हेमा शर्मा के नेतृत्व में 22 नवम्बर को आँगनवाड़ी की सेविकाओं का एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुआ। हर धर्म-वर्ग की बहिन ने गर्भ संस्कार की वैज्ञानिकता और गर्भस्थ शिशु के विकास के लिए गायत्री परिवार द्वारा बताये जा रहे शारीरिक, मानसिक, वैचारिक उपायों से पूरी तरह सहमत और उत्साहित थीं।

उल्लेखनीय है कि मुस्लिम महिलाएँ बड़ी संख्या में प्रशिक्षण में शामिल थीं। सभी ने अपने क्षेत्रों में गर्भवती बहिनों के लिए शिविर आयोजित करने का उत्साह दिखाया।

इससे पूर्व 20 नवम्बर को कार्यकर्त्ता बहिनों का प्रशिक्षण शिविर अंधेरी स्थित यज्ञशाला में रखा गया था। अंधेरी, मालाड, जुहू, कांदिवली, बोरीवली की बहिनों ने इसमें भाग लेते हुए गर्भ संस्कार को प्रभावशाली बनाने के सूत्र सीखे, अभियान को गति देने के उपयों पर चर्चा हुई। यज्ञशाला में प्रत्येक माह के प्रथम शुक्रवार को गर्भवती बहिनों का प्रशिक्षण शिविर लगाने का निर्णय किया गया। उमा शर्मा, मिनल पोपट, श्रद्धा साहू ने प्रशिक्षण दिया।

5000 बहिनों का सामूहिक पुंसवन संस्कार

वडोदरा (गुजरात) में दिनांक 30 दिसंबर से 3 जनवरी 2019 की तारीखों में अश्वमेध महायज्ञ की रजत जयंती मनाई जा रही है। यह अश्वमेध यज्ञ जैसा ही विराट आयोजन होगा, जिसमें 5000 गर्भवती बहिनों का सामूहिक पुंसवन संस्कार कराने का लक्ष्य रखा गया है।

बदलापुर में आयोजित कार्यशाला में अतिथियों का सम्मान करती बहिनें

जन आन्दोलन महिला मण्डल का प्रशंसनीय पुरुषार्थ

सुल्तानपुर। उत्तर प्रदेश : गायत्री शक्तिपीठ सुल्तानपुर पर हर माह गर्भोत्सव के सामूहिक कार्यक्रम हो रहे हैं। अपने मिशन के प्रभावशाली पावर पॉइण्ट प्रेज़ेण्टेशनों से हर वर्ग प्रभावित है। बिना किसी भेदभाव के हर वर्ग की बहिनें इसका लाभ ले रही हैं, गर्भ संस्कार करा रही हैं।

28 अक्टूबर को आयोजित कार्यक्रम में मुस्लिम बहिनों ने भी शक्तिपीठ पर आकर गर्भ संस्कार कराया।

यह महिला मण्डल की बहिनों के अथक संगठित पुरुषार्थ से ही संभव हुआ है। वे अस्पतालों में जाकर पैम्फ्लेट बाँटती हैं, गर्भवती बहिनों से सम्पर्क कर उन्हें सामूहिक गर्भोत्सव संस्कार में आने के लिए सहमत कर रही हैं। आंगनवाड़ी और आशा बहुओं से भी उन्हें इस कार्य में सराहनीय सहयोग मिल रहा है। इस अभियान में महिला मण्डल की बहिनों-प्रज्ञा सक्सेना, अमरावती सिहं, सरोज सिंह, मंजूरानी श्रीवास्तव, नाना श्रीवास्तव, स्नेहलता श्रीवास्तव, ममता शर्मा, सावित्री तिवारी, विद्योत्तमा तिवारी, बीना श्रीवास्तव, शोभा सिंह, मंजू सिंह इस अभियान में अग्रणी भूमिका निभा रही हैं।

30 बहिनों का सामूहिक पुंसवन संस्कार

धमतरी। छत्तीसगढ़

'आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी' अभियान को गति देते हुए धमतरी गायत्री महिला मण्डल की बहिनों ने 17 नवम्बर को 30 बहनों का गर्भोत्सव संस्कार सम्पन्न कराया। इस संस्कारोत्सव में महिमा सागर वार्ड दानीटोला की 12, अधारी नवागाँव की 9 तथा बठेना की 9 बहिनों ने अपनी सन्तानों को गर्भ से ही सुसंस्कारी बनाने की रचनात्मक पहल की।

संस्कार सम्पन्न कराने वाली बहिनों ने उन्हें गर्भ संस्कार की उपयोगिता और आज उसकी महती आवश्यकता के बारे में मार्गदर्शन देते हुए इसे घर-परिवार व समाज निर्माण के लिए अत्यावश्यक बताया। साथ ही गर्भ समय की देखभाल, आवश्यक दिनचर्या व सावधानियों के बारे में मार्गदर्शन दिया। श्रीमती शकुन, सुशीला, यशोदा, प्रमिला, गीता, सावित्री आदि बहिनों ने पौरोहित्य किया तथा आँगनबाड़ी के कार्यकर्त्ताओं ने सहयोग किया।

धमतरी में पुंसवन संस्कार कराती बहिनें

प्रेरणा दीप सामाजिक परिवर्तन की युवा उमंग

लंदन में पढ़ी सेतिका सिंह युवाओं को अर्थोपार्जन का कौशल सिखा रही हैं

सिवान। बिहार

- नौ वर्षों में 36 गाँवों के 5000 युवाओं को रोज़गार दिलाया
- 44 आँगनबाड़ी केन्द्रों से जुड़ी हैं।
- 3000 से ज्यादा महिलाएँ जुड़ी हैं।
- 22 स्कूलों के साथ शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रही हैं।
- 350 किसानों का क्लब है।

देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी की जन्मभूमि जीरादेई ब्लॉक का एक गाँव नरेन्द्रपुर आज पटना की एक युवती सेतिका सिंह की देशभक्ति और प्रगतिशील सोच के कारण चर्चा में है। पटना की सेतिका सिंह ने सन् 2009 में लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से पढ़कर आईं। उन्होंने युग के प्रवाह में बहने की बजाय समाज के उत्थान के लिए जीवन समर्पित करना बेहतर समझा और नरेन्द्रपुर की 8 एकड़ जमीन में परिवर्तन कैंपस खोला। यह कैम्पस बच्चों की शिक्षा से लेकर महिला और पुरुषों को अर्थोपार्जन का कोई न कोई कौशल सिखाकर उन्हें रोज़गार दिलाता है। पिछले 9 वर्षों में इस कैम्पस से 36 गाँवों के 5000 लोगों को रोजगार मिल चुका है।

संदर्भ : *दैनिक भास्कर, रायपुर (मंडे पॉज़िटिव)*

विचारणीय

पानी में जा रही है गाढ़ी कमाई

आजकल जल प्रदूषण के कारण घरों में RO लगवाने अथवा RO का पानी पीने का प्रचलन आम है। आजकल एक RO की किमत ₹8000से 12000 है। केण्डल बदलने, सर्विसिंग आदि पर हर वर्ष ₹3000 और हर दस वर्षों में ₹30,000 खर्च करने पड़ते हैं। इस प्रकार एक वर्ष में एक सामान्य घर को शुद्ध पानी के लिए न्यूनतम ₹38,000 खर्च करने होते हैं।

यदि RO का पानी खरीदकर पीते हैं और प्रतिदिन की उसकी कीमत ₹20 भी मान ली जाय तो 10 वर्ष में पानी का खर्च ₹70,0000 होगा।

अब गाज़ियाबाद शहर की ही बात करें, जहाँ 10 लाख परिवार रहते हैं। उन्हें शुद्ध पानी के लिए कुल कितना खर्च करना पड़ रहा है? यदि प्रति परिवार 10 वर्ष का औसत ₹50,000 मान लिया जाय तो ₹50,000 x 10,00,000 = 500 अरब या एक वर्ष में 50 अरब रुपये खर्च कर रहा है।

शुद्ध पानी के लिए एक नगर का एक वर्ष का खर्च 50 अरब रुपये है तो पूरे देश का खर्च क्या होगा?

सौजन्य से : *विक्रान्त एडवोकेट, हिंडन, गाजियाबाद (उ.प्र.)*

जरा सोचिए!

- क्या यह खर्च चंद लोगों द्वारा जल स्रोतों को गंदा किए जाने के कारण नहीं करना पड़ रहा?
- क्या इतने खर्च से अपने जलस्रोतों को शुद्ध नहीं किया जा सकता, ताकि हर व्यक्ति को प्राकृतिक रूप से ही शुद्ध जल मिल सके?

दरिद्र नारायण की सेवा

रोटी बैंक

भूखे पेट सोने वालों के लाभार्थ
घर-घर जाकर इकट्ठे किए जाते हैं
रोटी-सब्जी-दाल-चावल

धनबाद (बिहार) के युवक सन्नी सिन्हा, नितिन मुकेश, शिवकुमार और उनकी 30 सदस्यीय टोली ने भूखे पेट करवट बदलते गरीबों की भूख मिटाने की सेवा आरंभ की है। यह टोली पिछले छः माह से बिना किसी धर्म-जाति के भेदभाव के हर दर पर दस्तक देकर भोजन एकत्रित करती है और उसे लेकर देर रात तक गरीबों को भोजन कराने में जुटी रहती है।

दैनिक जागरण, लखनऊ 24 जून 2018, पृष्ठ 21 **संकलन** : *श्री राधेश्याम खंडेलवाल, बहराईच (उत्तर प्रदेश)*

अधिवक्ताओं की संगोष्ठी

'मौलिक कर्तव्य एवं इक्कीसवी सदी का संविधान'

उत्तर प्रदेश के 7 जिलों के अधिवक्ताओं ने भाग लिया

आगरा। उत्तर प्रदेश

आगरा स्थित गायत्री गेस्ट हाउस पर दिनांक 13 अक्टूबर 2018 को एडवोकेट्स कैम्पेन फॉर थॉट रिवोल्युशन द्वारा 'मौलिक कर्तव्य एवं इक्कीसवी सदी का संविधान' विषय पर संगोष्ठी आयोजित की गई। शांतिकुंज के वरिष्ठ प्रतिनिधि श्रद्धेय श्री वीरेश्वर उपाध्याय जी ने इसे सम्बोधित किया। संगोष्ठी में आगरा, मथुरा, अलीगढ़, हाथरस, कांशीरामनगर, एटा, फिरोजाबाद जिलों के अधिवक्तागण उपस्थित थे।

युग निर्माण सत्संकल्पों का क्षेत्रीय भाषाओं में प्रचार-विस्तार जनजागरूकता बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।
• श्रद्धेय श्री उपाध्याय जी

श्रद्धेय श्री वीरेश्वर उपाध्याय जी ने गंगा-यमुना जैसी पवित्र नदियों की स्वच्छता के संदर्भ में हो रही कानून की अवहेलनाओं के प्रति जागरूकता बरतने के सूत्रों पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि मौलिक नागरिक कर्तव्यों एवं युगनिर्माण सत्संकल्पों को स्थानीय भाषा में अनुवाद कर जन जागृति बढ़ाई जा सकती है।

जोन समन्वयक शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री कालीचरण शर्मा जी ने अधिवक्ताओं को उनके युगधर्म की याद दिलाई। उन्होंने कहा कि अधिवक्ताओं का योगदान स्वतंत्रता आंदोलन में भी प्रमुख रूप से रहा। पंडित मदन मोहन मालवीय, महात्मा गाँधी, बाल गंगाधर तिलक, डॉ. राजेंद्र प्रसाद, वल्लभभाई पटेल, जवाहर लाल नेहरू, डॉ.अम्बेडकर; सभी ने नैतिकता के आधार पर ही राष्ट्र के उत्कर्ष में अपना सर्वोच्च योगदान दिया था। आज उसी पुण्य परम्परा को दोहराने की आवश्यकता है।

पर्यावरण संरक्षण, निर्मल गंगा जन अभियान जैसे मुद्दों के संदर्भ में हो रही कानूनी अवहेलनाओं के विरुद्ध करणीय बिंदुओं पर विचार-विमर्श हुआ। राजस्थान से पधारे श्री सतीश कौशिक-जज फैमिली कोर्ट एवं गायत्री परिवार के नैष्ठिक कार्यकर्त्ता ने अधिवक्ताओं का मनोबल बढ़ाया।

श्री घनश्याम देवांगन, व्यवस्थापक शक्तिपीठ आंवलखेड़ा सहित मिशन के वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं और आमंत्रित गणमान्यों ने भी चर्चा में भाग लेते हुए उपयोगी सुझाव दिये।

सर्वश्री श्री छोटे लाल वर्मा, श्री विजय पाल बघेल , श्री एस.एस चाहर, श्री मोहकम सिंह, श्री फूल सिंह आदि बड़ी संख्या में उत्साही अभिवक्ताओं ने बड़ा ही उत्साहवर्धक योगदान दिया।

सिवनी उपजोन के कार्यकर्त्ताओं का प्रशिक्षण एवं संगोष्ठी

श्री काली चरण शर्मा जी गोष्ठी को संबोधित करते हुए

सिवनी। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ सिवनी पर 5 से 9 नवम्बर की तारीखों में उपजोन स्तरीय कार्यकर्ता प्रशिक्षण सत्र आयोजित हुआ। इसमें उपजोन के 4 जिलों से 70 कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। श्री रामचन्द्र गायकवाड़ एवं साथियों ने क्षेत्र में ग्राम तीर्थ यात्रा, गृहे-गृहे यज्ञ योजना, पंच महाअभियान को प्रोत्साहित करने पर बल दिया। प्रत्येक कार्यकर्ता में टोली नायक स्तर की योग्यता निखारी गयी।

सक्रियता के शानदार संकल्प उभरे

प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं ने अपने जिले में प्रत्येक माह के 2 रविवारों को एवं अन्य छुट्टी के दिनों में समयदान करने का संकल्प लिया। प्रज्ञा अभियान पाक्षिक, अखंड ज्योति पत्रिका, युग निर्माण पत्रिका के सदस्य दुगुने करने का भी संकल्प लिया। प्रज्ञा अभियान को प्रचार पत्रक के रूप में घर-घर पहुँचाने, नये लोगों तक मिशन को ले जाने की योजना बनी।

केन्द्रीय मार्गदर्शन मिला

अंतिम दिवस जोन समन्वयक शांतिकुंज के प्रतिनिधि श्री कालीचरण शर्मा जी ने उपस्थित चारों जिले के 500 कार्यकर्ताओं को संबोधित किया। उन्होंने सन् 2026 तक चलने वाली मातृ शक्ति श्रद्धांजलि साधना के साथ जोड़कर ग्राम स्तर पर मिशन को फैलाने के सूत्रों की चर्चा की।

प्रबुद्धवर्ग सम्मेलन

श्री कालीचरण शर्मा जी की उपस्थिति में रात्रि में 8 बजे बौद्धिक गोष्ठी हुई। इसमें कालेजों के प्राचार्य, अधिवक्ता, राजनेता, पत्रकार एवं अन्य गणमान्यों ने भाग लिया। शक्तिपीठ व्यवस्थापक श्री सुंदरलाल बघेल के अनुसार इस गोष्ठी ने लोगों में समय की धारा को चीरते हुए राष्ट्र के नवनिर्माण के लिए कुछ करने की हूक जगाई।

ज्ञानयज्ञ के लिए जिले में जागी नई उमंग

मण्डल सम्मेलन

मैनपुरी। उत्तर प्रदेश

11 नवम्बर को मैनपुरी जिले में मण्डल सम्मेलन आयोजित हुआ। उत्तर जोन प्रभारी शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री रामयश तिवारी ने इसे संबोधित करते हुए सैकड़ों कार्यकर्त्ताओं को सामयिक कार्यक्रमों की जानकारी दी। निम्न प्रेरणाएँ प्रमुख रूप से उभरीं :-

- बढ़ते दायित्वों के अनुरूप उपासना-साधना का नियमित क्रम अपनायें।
- 'ग्रामे-ग्रामे यज्ञ' योजना को गति मिले, नये मण्डल बनें।
- नये-पुराने लोगों तक मिशन को

पहुँचाने, सक्रियता बढ़ाने के लिए प्रज्ञा अभियान को आधार बनायें।

- श्रवण कुमार बनकर मिशन की पत्रिकाओं और युगऋषि की पुस्तकों को घर-घर पहुँचायें।

श्रीमती जावित्री यादव एवं श्री जगदीश स्वरूप दीक्षित ने इस सम्मेलन के आयोजन में प्रशंसनीय योगदान दिया।

प्रयागराज कुंभ-2019 के लिए क्षेत्रीय कार्यकर्त्ताओं का प्रशिक्षण शिविर

वाराणसी। उत्तर प्रदेश

गायत्री परिवार वाराणसी जोन के दानुपुर रचनात्मक ट्रस्ट द्वारा प्रयागराज कुम्भ मेला को लक्ष्य कर जीवन दीप महविद्यालय के सेन्ट्रल हाल में 3-4 नवम्बर को जिले स्तर पर कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। इसमें बड़ी संख्या में वाराणसी व निकटतम जिलों से आये परिजनों ने भाग लिया।

शिविर में कुम्भ मेले में गायत्री परिवार की रूपरेखा पर प्रमुख रूप से चर्चा हुई। पूज्य गुरुदेव के विचारों को अधिकाधिक फैलाने की योजना बनायी गई। लोगों को ज्ञानयज्ञ के लिए प्रेरित करने का आह्वान किया गया। इन दायित्वों को पूरा करने हेतु प्रतिभागी वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं, जिला समन्वयकों व समर्थ परिजनों से अपने यहाँ प्रशिक्षण शिविर आयोजित कर स्वयंसेवी तैयार करने का आग्रह किया गया।

शिविर को वाराणसी जोन के श्री प्रसेन सिंह, उपजोन के श्री बाल मुकुन्द शुक्ल, सुनेन्द्र सिंह गंगाधर उपाध्याय, विजय शंकर ने संबोधित किया।

लखनऊ के 300 से अधिक सार्वजनिक पुस्तकालयों में युगऋषि का समग्र वाङ्मय स्थापित कराने वाले श्री उमानंदन शर्मा

संकल्प और समर्पण के बल से छू लिया असाधारण सफलता का शिखर

लखनऊ। उत्तर प्रदेश

वैज्ञानिक अध्यात्मवाद के प्रणेता युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य की तपःपूत लेखनी में विश्वमन को बदलने की अद्भुत सामर्थ्य है। वे स्वयं कहा करते थे कि हमारे विचार 'क्रान्ति के बीज' हैं, इन्हें समाज में फैला दो, बाकी काम वे स्वयं कर लेंगे।

यह नितांत सत्य है कि विश्वमानस की मनःस्थिति बदले बिना विश्व में शांति-सद्भाव की स्थापना नहीं हो सकती। इसीलिए आज देशभर में परम पूज्य गुरुदेव के विचारों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए तरह-तरह के प्रयास हो रहे हैं। बड़े-बड़े पुस्तक मेले, झोला पुस्तकालय, पत्रिकाओं की सदस्यता का विस्तार, निःशुल्क साहित्य वितरण जैसे कार्यों में हजारों अग्रदूत जुटे हैं। विचार क्रांति के इन्हीं अग्रदूतों में एक चमकता सितारा है गायत्री ज्ञान मंदिर, इंदिरा नगर के व्यवस्थापक श्री उमानंद शर्मा। अटूट संकल्प, अथाह समर्पण, अथक सक्रियता के बल पर उन्होंने अब तक लखनऊ और आसपास के 302 प्रतिष्ठित पुस्तकालयों में युगऋषि का समग्र वाङ्मय साहित्य स्थापित करने का एक भागीरथी किया है, जिसके लिए उन्हें शांतिकुंज की ओर से गुरुपूर्णिमा-2017 को 'युग व्यास स्मृति सम्मान' से सम्मानित किया जा चुका है।

संकल्प बीज, जो वटवृक्ष बन गया

श्री उमानंद शर्मा जी ने सन् 2011 में मात्र 24 पुस्तकालयों में समग्र वाङ्मय स्थापित करने का संकल्प लिया था। अपनी निःस्वार्थ सेवाओं और प्रखर-प्रभावशाली व्यक्तित्व के आधार पर उन्होंने लोगों का भरपूर प्रेम पाया। उनकी प्रेरणा से परिजनों ने अपने स्वर्गीय प्रियजनों की पावन स्मृति को अक्षुण्ण रखने के लिए विभिन्न पुस्तकालयों में युगऋषि का समग्र

केन्द्रीय विद्यालय, गोमती नगर लखनऊ में 302वें वाङ्मय की स्थापना। श्रीमती गुन्नीदेवी के सौजन्य से यह साहित्य प्रधानाचार्य डॉ. सीवीपी वर्मा को भेंट किया गया।

वाङ्मय स्थापित करने की पावन परम्परा आरंभ कर दी। कई लोगों ने तो साहित्य रखने के लिए आलमारियाँ भी भेंट कीं। गुरुकृपा से क्रमशः संकल्प बढ़ता गया और पूरा होता गया। अब लक्ष्य 351 पुस्तकालयों में वाङ्मय स्थापित करने का है।

शिक्षण संस्थानों व महत्त्वपूर्ण प्रतिष्ठानों में

आरंभ में उन्होंने राजभवन, विधान सभा सचिवालय, एसजीपीजीआई सहित अनेक प्रतिष्ठित पुस्तकालयों में वाङ्मय साहित्य स्थापित कराया। आगे चलकर मुख्य रूप से विद्यालय, महाविद्यालय, तकनीकी शिक्षण संस्थानों, मीडिया समूहों के संदर्भ ग्रंथालयों, बड़े औद्योगिक प्रतिष्ठानों में स्थापित करने की पुण्य परम्परा चल पड़ी, जिससे लाखों लोग निरंतर प्रेरित-प्रभावित होते रहेंगे। युग गंगोत्री का प्रेरणा-प्रवाह अनवरत रहेगा। जहाँ-जहाँ भी यह साहित्य स्थापित हुआ, वहाँ निःशुल्क साहित्य भी बड़ी मात्रा में वितरित किया गया।

युगऋषि के विचारों ने बदल दिया जीवन

हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लि. में यूनियन लीडर के रौब दाब व शानोशौकत की जिंदगी बसर करने वाले उमानन्द शर्मा के जीवन को पूज्य गुरुदेव के विचारों के आमूलचूल बदल दिया। पाँच बेटियों के पिता होने के बावजूद भी उन्होंने अपने एकमात्र आवास को गायत्री ज्ञान मंदिर व शांतिकुंज भवन के रूप में समर्पित कर दिया। उन्होंने अपना पूरा जीवन ही युगऋषि के विचार बीजों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए समर्पित कर दिया है।

वाङ्मय स्थापना अभियान के संयोजक, गायत्री ज्ञान मंदिर, इंदिरा नगर के संस्थापक श्री उमानंद शर्मा

शांतिकुंज के अलावा श्री उमानंद शर्मा जी को उनकी ज्ञान विस्तार के लिए की गई महती सेवाओं के लिए कई पुरस्कार मिले। उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री डॉ. दिनेश शर्मा और प्रथम महिला महापौर श्रीमती संयुक्ता भाटिया द्वारा भी सम्मानित किए जा चुके हैं। जिलाधिकारी एवं अन्य अधिकारियों, सामाजिक संस्थानों ने उन्हें कई बार सम्मानित किया है। उनके नेतृत्व में चल रहे विचार क्रांति के एक महान आन्दोलन में डॉ. नरेन्द्र देव, सर्वश्री वी.के. श्रीवास्तव, श्याम मुरारी गोयल, वरुण तिवारी, विपिन सहाय यादव, आर.के. चौहान, अनिल भटनागर, विनोद रतौड़ी, देवेन्द्र सिंह, शिशिर दीक्षित, श्रीमती सावित्री शर्मा, श्रीमती उषा सिंह, श्रीमती कमला सक्सेना, श्रीमती चित्रा त्रिपाठी, श्रीमती सुनीता चौहान, श्रीमती मुन्नीदेवी, श्रीमती अर्चना, डॉ. नीलम गुप्ता, श्रीमती कविता महेन्द्रा का विशेष सहयोग रहा है।

गायत्री ज्ञान मंदिर द्वारा अब तक 29 विशाल पुस्तक मेले भी लगाये जा चुके हैं।

52 विद्यालयों में 17000 से अधिक बच्चों का विद्यारंभ संस्कार कराया

सानन्द, अहमदाबाद। गुजरात

स्थानीय प्रज्ञा युवा मण्डल सानन्द एवं महिला मण्डल ने अपने क्षेत्र के विद्यालयों में जनजागृति का सशक्त अभियान चला रखा है। विगत अगस्त-सिमम्बर माह में उनके द्वारा 52 विद्यालयों में संपर्क कर वहाँ सामूहिक विद्यारंभ संस्कार आयोजित किए गये। युवा मण्डल प्रभारी श्री विकास कुमार मिश्रा ने बताया कि उनका प्रयास इन विद्यालयों से निरंतर संपर्क बनाने और बढ़ाने का है ताकि उन्हें समय-समय पर नैतिक शिक्षा दी जा सके।

विद्यारंभ कार्यक्रमों के माध्यम से 17000 से अधिक विद्यार्थियों का विद्यारंभ संस्कार कराया गया। सभी में जेबी पुस्तकों के फोल्डर लगाये गये। 15 विद्यालयो में पावर पॉइण्ट प्रेज़ेण्टेशन के माध्यम से बच्चों को व्यसनमुक्ति का संदेश दिया गया।

- यह शाखा पिछले 24 सप्ताह से साप्ताहिक वृक्षारोपण कार्यक्रम चला रही है।
- इन दिनों गर्भोत्सव संस्कारों का आयोजन भी किया जा रहा है, जिससे 160 से अधिक बहिनें लाभान्वित हुई हैं।

किसी भी जीव को सताओ मत, क्योंकि वह भी तुम्हारी ही तरह एक आत्मा है। - सन्त एकनाथ

स्वास्थ्य | शक्तिपीठ द्वारा मनाया गया प्राकृतिक चिकित्सा सप्ताह

दैनिक पंचकर्म, बच्चों की प्रतियोगिताएँ, जनजागरण रैली

आयुष मंत्रालय व आई .एन .ओ . द्वारा की गई 18 नवम्बर को प्राकृतिक चिकित्सा दिवस के रूप में मनाने की घोषणा

नीमच। मध्य प्रदेश

इस वर्ष भारत सरकार के आयुष मंत्रालय एवं अन्तरराष्ट्रीय संस्थान आई.एन.ओ. द्वारा 18 नवम्बर को 'प्राकृतिक चिकित्सा दिवस' के रूप में मनाये जाने की घोषणा की गई है। प्राकृतिक चिकित्सा के लिए विख्यात गायत्री शक्तिपीठ नीमच ने इसका हार्दिक स्वागत करते हुए न केवल प्रथम 'प्राकृतिक चिकित्सा दिवस' मनाया, बल्कि पूरे सप्ताह (11 से 18 नवम्बर तक) प्राकृतिक चिकित्सा को लोकप्रिय करने के लिए जनजागरण अभियान चलाया।

12 से 17 नवम्बर तक के छः दिनों में प्रवीण चिकित्सकों की देख-रेख में पंजीकृत रोगियों की पंचतत्व चिकित्सा की गई। मिट्टी स्नाना पर विशेष बल दिया गया, दोपहर 12 से 1 बजे तक प्रतिदिन सामूहिक मिट्टी स्नान का कार्यक्रम रखा गया। चिकित्सकों ने बताया कि मिट्टी में शरीरगत विषों को सोखने की जबजस्त क्षमता होती है।

मंच से मार्गदर्शन देते निष्णात चिकित्सक और दैनिक मिट्टी स्नान का लाभ लेते मरीज

16 नवम्बर को गायत्री मंदिर द्वारा संचालित प्रज्ञा पाठशाला में 'कौन बनेगा स्वास्थ्य रक्षक' विषय पर चित्रकला एवं विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित हुई, जिसमें कक्षा 8 के विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया।

18 नवम्बर को एक विशाल रैली निकाल कर नगरवासियों को प्राकृतिक चिकित्सा का महत्त्व बताया गया। शाम 5 बजे प्राकृतिक चिकित्सा पर सेमिनार व सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर प्राकृतिक चिकित्सा प्रेमी डॉ. हरनारायण गुप्ता, श्री हर्षद राय त्रिवेदी, प्रदीप राव मराठा, कु. दुर्गा विश्वकर्मा, सुशीला सुथार, युगल शर्मा, भगवानदीन प्रजापति एवं प्रधानाचार्य श्री गिरिराज सिंह चौहान को श्रीफल व शाल भेट कर सम्मानित किया गया। गायत्री परिवार के अलावा आई.एन.ओ., योग परिवार, स्वाध्याय मंडल, कृति संस्था के अध्यक्ष श्री सत्येन्द्र सक्सेना, लायनेस अध्यक्ष श्रीमती चन्द्रकान्ता दानगढ़ आदि गणमान्यों की उपस्थित ने सभा की गरिमा बढ़ायी।

नि:शुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर का 130 मरीजों ने लाभ लिया

भीलवाड़ा। राजस्थान

18 नवंबर को गायत्री परिवार एवं लायंस क्लब के संयुक्त तत्त्वावधान में नेत्र चिकित्सा शिविर लगाया गया। इसमें 105 मरीजों की जाँच कर उन्हें नि:शुल्क दवाइयाँ दी गईं तथा मोतियाबिंद के 25 मरीजों का नि:शुल्क ऑपरेशन किया गया। इस शिविर के लिए डॉ. विनय बोहरा व उनके सहयोगियों ने अच्छी सेवाएँ दीं।

श्री मनोज गुप्ता जी के विशेष प्रयास से आयोजित इस शिविर में महिला मण्डल की नीलम, मधु, राहुल, नरेन्द्र मिश्रा, राजकुमार तिवारी, महितोष ओझा, वेद प्रकाश तिवारी, सुनील बिरला, राजेश ओझा, योगेश, राजेन्द्र पुरोहित, राजेन्द्र सिंह आदि परिजनों ने अच्छा सहयोग किया।

मरीजों का परीक्षण करते चिकित्सक और लाभार्थी मरीज

प्रतिभा परिष्कार | वॉइस ऑफ प्रज्ञा का प्रथम चरण सम्पन्न

प्रतिभा, आस्था व संस्कारों को निखारने के प्रयास

जबलपुर। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार ट्रस्ट जबलपुर पिछले पाँच वर्षों से बच्चों में छिपी गायन एवं संगीत की प्रतिभा को निखारने के साथ उनकी आध्यात्मिक आस्था बढ़ाने, संस्कारवान बनाने के लिए 'वॉइस ऑफ प्रज्ञा' प्रतियोगिता का आयोजन कर रहा है। यह प्रतियोगिता तीन स्तरीय होती है। विजेताओं को क्रमशः अलगे चरण में प्रवेश मिलता है। उनकी गायकी से प्रभावित लोग उन्हें विभिन्न आध्यात्मिक कार्यक्रमों में प्रस्तुति के लिए आमंत्रित करते हैं।

इस वर्ष 'वॉयस ऑफ प्रज्ञा' का प्रथम चरण 11 नवम्बर को सम्पन्न हुआ। इसमें विभिन्न आयु-वर्ग के कई बच्चों ने भाग लिया। कार्यक्रम संयोजक एवं निर्णायक मण्डल के सदस्य श्री गोविन्द श्रीवास्तव व श्रीमती पूजा झा सहित ट्रस्ट के श्री प्रमोद राय, डॉ. सचिन जी, डॉ. आशीष राव, श्री ओमप्रकाश सेन व देवेन्द्र श्रीवास्तव ने प्रतिभागियों का उत्साह बढ़या, अगले चरण की सफलता के लिए बहुमूल्य सूत्र दिये।

आयोजकों के संग प्रथम चरण के सफल प्रतिभागी

श्री भैयाराम पटेल, श्रीमती वन्दना राजपूत, श्रीमती पूनम दुबे, भास्कर तिवारी, विजय वर्मा व देवराज आदि ने विशेष सहयोग किया। सैकड़ों संगीतप्रेमियों ने मनमोहक प्रस्तुतियों का आनन्द लिया।

नशामुक्ति कार्यशाला

कोटा। राजस्थान

अरिहंत सीनियर सेकेंडरी स्कूल कोटा में 30 नवम्बर को नशामुक्ति कार्यशाला हुई। दिया, कोटा के प्रतिनिधि श्री विशाल नैनीवाल के अनुसार इसमें न केवल बच्चों को नशों से होने वाली हानियों की जानकारी दी गई, बल्कि शपथ समारोह भी आयोजित किया गया। इसके अंतर्गत सभी को नशे से दूर रहने और दूसरों को भी नशे के चंगुल से बचाने व छुड़ाने की प्रेरणा दी गई। विद्यार्थियों ने नशे को एक सामाजिक समस्या मानते हुए इसके खिलाफ संघ को अपना नैतिक कर्त्तव्य बताया, सहयोग का संकल्प लिया।

श्री विशाल नैनीवाल के अनुसार नगर में नशामुक्ति अभियान जोरशोर से चलाया जा रहा है। नगर के विद्यालयों, सार्वजनिक स्थानों में समय-समय पर ऐसी कार्यशालाएँ आयोजित की जाती हैं।

दिवंगत देवात्माओं को समस्त गायत्री परिवार की भावभरी श्रद्धांजलि

श्रीमती राजकुमारी सिंह बरिहा, शान्तिकुञ्ज। हरिद्वार

अत्यंत शांत और मिलनसार स्वभाव की ओर सादा जीवन जीने वाली शान्तिकुञ्ज की जीवनदानी कार्यकर्त्ता श्रीमती राजकुमारी सिंह बरिहा का 19 नवम्बर 2018 को 64 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। वे स्व. श्री तेजराज सिंह बरिहा की धर्मपत्नी थीं, सन् 1986 से ही नियमित रूप से यहाँ सेवाएँ प्रदान कर रही थीं। उनके एकमात्र सुपुत्र चि. गोविन्द सिंह बरिहा भी अपने पिता-माता की तरह स्वयंसवी कार्यकर्त्ता के रूप में गुरुधाम शांतिकुंज को अपनी सेवाएँ दे रहे हैं।

श्री शिवलाल माली, उदयपुर। राजस्थान

रोशन की बाड़ी, उदयपुर निवासी स्वयंसेवक श्री शिवलाल माली जी का 24 सितम्बर 2018 को सड़क दुर्घटना में देहावसान हो गया। वे 65 वर्ष के थे। गायत्री शक्तिपीठ उदयपुर से जुड़े रहकर बड़ी निष्ठा के साथ पूज्य गुरुदेव के विचारों को जन-जन तक पहुँचाने में अपना योगदान दे रहे थे।

श्रीमती सरोज सोम, मन्दसौर। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार की सक्रिय स्वयंसेविका श्रीमती सरोज सोम धर्मपत्नी डॉ. वेदपाल सोम का 10 नवम्बर 2018 को 74 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। वे 1972 से मिशन की सेवा कर रही थीं। अपने बच्चे श्री जितेन्द्र सिंह प्रज्ञेय, सत्येन्द्र सिंह व योगेन्द्र सिंह भी अपने माता-पिता के पदचिह्नों पर चलते हुए मिशन की नैष्ठिक सेवा कर रहे हैं।

श्री गोविंद प्रसाद उपाध्याय, बुलंदशहर। उत्तर प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ अनूपशहर के संस्थापक श्री गोविंद प्रसाद उपाध्याय जी का 94 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उन्होंने मिशन को 40 से अधिक वर्षों तक अपनी सक्रिय सेवाएँ प्रदान की थीं। वे गायत्री परिवार जनपद बुलंदशहर के संरक्षक भी थे।

नशामुक्त भारत रथयात्रा

प्रतिदिन नगर, गाँव, विद्यालय के हजारों लोगों के बीच पहुँच रहा है संदेश

समाज को नशामुक्त जीवन जीने का संदेश देने के लिए शांतिकुंज द्वारा चार वीडियो रथ पूरे देश में भेजे गये हैं। ये देश की चारों दिशाओं में प्रतिदिन हजारों लोगों से जनसंपर्क कर रहे हैं। नगर, गाँव, नुक्कड़-चौराहों, विद्यालय-महाविद्यालयों आवासीय कॉलोनियों में वीडियो प्रदर्शन के साथ नशामुक्ति का संदेश दे रहे हैं।
प्रस्तुत है अभियान की सफलता के कुछ बिन्दु

औरंगाबाद। बिहार : औरंगाबाद के 12 स्थानों पर फिल्म प्रदर्शन के साथ व्यसनमुक्ति सन्देश दिया गया। 5 गाँवों में, 3 सोयायटियों में, 2 स्कूलों में तथा 2 एकादमी में कार्यक्रम हुए। कुल मिलाकर करीब 4000 लोगों ने नशामुक्ति का सन्देश सुना और नशामुक्त जीवन जीने के संकल्प लिये। इन कार्यक्रमों में बच्चों और युवाओं ने खास रुचि दिखाई जो कि नशामुक्त भारत अभियान को सफल बनाने की दिशा में बहुत ही शुभ संकेत है।

बाँका। बिहार : बाँका जिले के विभिन्न क्षेत्रों में नशामुक्ति प्रदर्शन को देखने के लिए हर क्षेत्र में हजारों बच्चों औश्र नगरवासियों की भीड़ उमड़ी। संग्रामपुर काली मंदिर, गायत्री मंदिर, अमरपुरा प्रखण्ड, बारह हाथ कृष्ण मण्डल केन्द्र, के अलावा दयानन्द आवासीय विद्यालय, आदत हायर सेकण्ड्री स्कूल, चंद्रनारायण देव मा. विद्यालय बौंसी आदि में वीडयो प्रदर्शन के चित्र प्राप्त हुए हैं। प्रत्येक कार्यक्रम में हजारों नगरवासी-बच्चे इनका लाभ लेते दिखाईदे रहे हैं।

औरंगाबाद के एक विद्यालय में नशामुक्ति पर फिल्म दिखाता शांतिकुंज का वीडियो रथ

लखीमपुर खीरी। उत्तर प्रदेश : 15 अक्टूबर को नवभारत पब्लिक स्कूल लखीमपुर के 380 विद्यार्थियों को नशामुक्ति का संदेश दिया गया। अगले दिन श्री गाँधी इ. कॉलेज बिलरायाँ में वीडियो प्रदर्शित किया गया, जिसे 1000 से अधिक बच्चों ने देखा, बहुत प्रभावित हुए। अनेक बच्चों ने जीवनभर नशा न करने के संकल्प लेकर अन्यों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित किया। ऐसा ही कार्यक्रम नेहरू कन्या इ. कॉलेज हरदवाही, बिलरायाँ में हुआ, 460 बच्चों ने इसे देखा और अभियान को अपना समर्थन दिया।

सिलीगुड़ी। प. बंगाल : सिलीगुड़ी पहुँची नशामुक्त भारत यात्रा का नगरवासियों ने बड़े उत्साह के साथ स्वागत किया। इसे लाल बहादुर शास्त्री हिन्दी हाईस्कूल सहित कई विद्यालयों में ले जाया गया। वहाँ शांतिकुंज प्रतिनिधियों ने बच्चों को नशे के दुष्प्रभावों की जानकारी देते हुए नशे के चंगुल से बचने और व्यक्तित्व सँवारने के लिए गायत्री उपासना नियमित रूप से करने के संकल्प कराये।

जटला, बरगड़। ओड़िशा

माँ भगवती देवी सेवाश्रम, जटला के युवाओं ने 'भारत नशा छोड़ो' अभियान में भागीदारी करते अपने क्षेत्र में 'नशा भगाओ-स्वास्थ्य बचाओ' कार्यक्रम शुरु किया है। इसमें गाँवों और स्कूलों के बच्चों के बीच पहुँचकर उनसे नशों से दूर रहने का आग्रह किया जा रहा है।

जटला में नशामुक्ति संदेश देते परिजन व बच्चे

इसी क्रम में 24 नवम्बर को वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री तियर नायक के मार्गदर्शन में स्कूली बच्चों को साथ लेकर 'नशामुक्ति रैली' निकाली, पूरे गाँव में संदेश दिया। इस रैली में 'माँ भगवती देवी सेवाश्रम' के सर्वश्री सुधांशु खमारी, कीर्तन साहू, तपोधन साहू, ठुलेश्वर, शचीन्द्र आदि भाइयों व सुश्री पद्मसिनी, आलादिनी, संयुक्ता, सोमवन्ती, अश्विनी आदि बहिनों ने भाग लेकर जनजागरण किया।

जन्मदिवस पर पौधारोपण की पुण्य परम्परा को प्रोत्साहन

बालाघाट। मध्यप्रदेश

औद्योगिक ग्राम गर्रा में प्रतिवर्ष की भाँति कार्तिक शुक्ल देव प्रबोधनी एकादशी को गायत्री प्रज्ञापीठ का वार्षिकोत्सव मनाया जाता है। इस वर्ष के वार्षिकोत्सव में उद्योगपति किरण भाई त्रिवेदी, वरिष्ठ कार्यकर्त्ता डॉ. चारुदत्त जोशी, श्री महेश खजांची सहित गायत्री परिवार के कई गणमान्यों ने भाग लेकर यज्ञ भगवान से जन कल्याण की प्रार्थना की। श्री त्रिवेदी जी ने इस अवसर पर गायत्री परिवार से जुड़ने पर प्रसन्नता व्यक्त की।

श्री महेश खजांची ने अपना जन्म दिवसोत्सव मनाया। उन्होंने त्रिवेदी जी के साथ नीम का पौधा लगाया और अन्यों को भी पौधा रोपण की प्रेरणा दी। डॉ. चारुदत्त जोशी ने सबसे ग्रामोत्थान में सहयोग के लिए अपील की। यज्ञ संचालन बहिनों ने किया।

जन्मदिन पर पौधे रोपते श्री महेश खजांची

काम के समान व्याधि नहीं, मोह के समान वैरी नहीं, क्रोध के समान आग नहीं और ज्ञान से परे सुख नहीं। - चाणक्य

शक्ति संवर्धन 108 कुण्डीय यज्ञों ने जगाई आध्यात्मिक जीवन-ज्योति

देव संस्कृति विवि. के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय जी की प्रेरणा से यौवन में उभरे मानवता को नई दिशा देने के संकल्प

जीवन का उद्देश्य पहचानो, उसे सार्थक बनाओ। - डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

इन दिनों पूरे देश में चल रही शक्ति संवर्द्धन गायत्री महायज्ञ श्रृंखला चल रही है। कुछ कार्यक्रमों में युवा युगनायक देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या पहुँचे। उनके सान्निध्य में दीप महायज्ञ सम्पन्न हुए। उनकी मार्मिक प्रेरणाएँ युवा मन को झकझोरने वाली थीं। कहीं 11000 तो कहीं 21000 दीप जले। अलौकिक दिव्यता ने सभी को भावविभोर कर दिया। लेकिन उससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण था श्रोताओं के मन में नवयौवन का संचार। जहाँ सारी दुनिया में राष्ट्र के उत्कर्ष के भौतिक उपायों की चर्चा हो रही है, वहीं शांतिकुंज से आये युवा युगनायक डॉ. चिन्मय जी ने अपने जीवन का उद्देश्य समझने और आत्मोत्कर्ष से राष्ट्रोत्थान की राह दिखाई। हर कार्यक्रम में हजारों युवाओं को नई दृष्टि और नई दिशा मिली, यौवन धन्य हो गया।

डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी निघासन में आयोजित दीपयज्ञ के अवसर पर क्षेत्र की युवाशक्ति को संबोधित करते हुए

बच्चों को बटोरना नहीं, बचपन से ही बाँटना सिखायें

बदायूँ। उत्तर प्रदेश

28 से 31 अक्टूबर की तारीखों में आयोजित 108 कुण्डीय शक्ति संवर्धन गायत्री महायज्ञ में दीपयज्ञ के अवसर पर डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने उपस्थित हजारों युवाओं और प्रबुद्धों को संबोधित किया। उन्होंने कहा-

यौवन दीपक की तरह प्रकाशित होना चाहिए। दीपक त्याग और बलिदान का प्रतीक है। पतन के लिए, गलत करने के लिए कुछ नहीं करना होता है, किन्तु अच्छाई की ओर बढ़ने के लिए त्याग और बलिदान देना होता है। कहा कि हिंसा, बुरे कर्म, दुराचार आदि करने के लिए कोई यूनीवर्सिटी नहीं होती, मगर सत्कर्म बेहद कठिन है। युवा कोई वय नहीं है, वास्तव में जिसमें पतन के प्रवाह के विरुद्ध संघर्ष करने की, अच्छाइयों को अपनाने की, समाज को सही मार्ग दिखाने की उमंग है, वही युवा है।

इस अवसर पर डॉ. चिन्मय जी ने व्यसन, पर्यावरण, बेरोजगारी जैसी युवाओं से जुड़ी अनेक समस्याओं पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि मानवता को बदलने की नई प्रेरणा और संकल्प के भाव मन में उभरें, इसी में जीवन की सार्थकता है।

> दीपक
> यौवन का प्रतीक है, जो
> त्याग और बलिदान करते हुए
> स्वयं प्रकाशित होना और अँधियारे
> को चुनौती देना सिखाता है।
> - डॉ. चिन्मय पण्ड्या

बदायूँ में डॉ. चिन्मय जी शक्तिपीठ पर कदम्ब की पौध लगाते हुए

बच्चों को बटोरना नहीं, बाँटना सिखायें

बच्चों में यज्ञभाव विकसित करने की प्रेरणा देते हुए उन्होंने कहा कि हर माता-पिता अपने बच्चों को बटोरना सिखा रहा है। नन्हे बच्चों को कहा जाता है कि किसी को पेंसिल नहीं देना, किसी को टिफिन नहीं देना आदि। इसके स्थान पर उनमें देने की भावना विकसित करनी चाहिए। जितना बाँटोगे, उसका दस गुना मिलना तय है।

प्रथम प्रवास पर भावभरा स्वागत

डॉ. चिन्मय जी के प्रथम प्रवास से पूरा बदायूँ गद्गद था। विधायक प्रेमस्वरूप पाठक, नगर पालिका अध्यक्ष दीपमाला गोयल, डीसीबी अध्यक्ष उमेश राठौर सहित अनेक गणमान्यों ने उनका भावभरा स्वागत किया।

चार दिवसीय कार्यक्रम शांतिकुंज से पहुँची श्री शशिकान्त सिंह की टोली ने सम्पन्न कराया। 30 अक्टूबर को शक्तिपीठ बिसौली ने दीपयज्ञ की व्यवस्थाएँ सँभालीं। इस अवसर पर पूरा क्षेत्र 10 हजार दीपों की दिव्य ज्योति से जगमगा रहा था।

आदर्श विवाह हुए

अन्यान्य संस्कारों के साथ उझानी और बिसौली के एक-एक जोड़ों का आदर्श विवाह इस कार्यक्रम में सम्पन्न हुआ, हजारों लोगों ने आदर्श प्रेरणाएँ हृदयंगम कीं।

एक दिव्य अनुदान

शक्तिपीठ बदायूं के लिए अपना जीवन समर्पित करने वाली वरिष्ठ बहिन माया सक्सेना ने अपने जीवन यापन से बचाई गई 2.11 लाख रुपये की रकम वेदमाता गायत्री ट्रस्ट को दान स्वरूप चेक के रूप में डॉ.पंडया को भेंट की।

- डॉ. चिन्मय जी ने गायत्री शक्तिपीठ में सजल श्रद्धा-प्रखर प्रज्ञा एवं शिवालय के शिलापट्ट का शिलान्यास किया। कदम्ब का एक पौधा भी लगाया।
- वे परम पूज्य गुरुदेव द्वारा प्राण प्रतिष्ठित शक्तिपीठ कुंवरगाँव के दर्शन के लिए भी गए।

युवा शक्ति को जाग्रत् होना पड़ेगा

निघासन, खीरी। उत्तर प्रदेश

निघासन में सम्पन्न हुए शक्ति संवर्धन 108 कुण्डीय महायज्ञ को संबोधित करते हुए डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने कहा कि देश को जाग्रत् कर उन्नति और वैभव की राह पर चलाते रहने के लिए युवाशक्ति का जाग्रत् होना बहुत जरूरी है। इस अवसर पर हजारों लोगों की विशाल जनमेदिनी ने 31000 प्रज्वलित दीपों की साक्षी में देव संस्कृति के महान सूत्रों को जीवन में उतारने की प्रेरणा पाई।

इससे पूर्व जिले में पहली बार उनके आगमन पर उनका प्रमुख कार्यकर्त्ता श्री सत्यनारायण वर्मा आदि द्वारा जोरदार स्वागत किया गया। निघासन का पाँच दिवसीय यज्ञोत्सव श्री शशिकांत सिंह की टोली ने सम्पन्न कराया।

कार्यक्रम में 121 यज्ञोपवीत एवं शताधिक अन्यान्य संस्कार हुए।

अंतिम दिन 16 नवम्बर को मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना के अन्तर्गत सर्वधर्म आदर्श विवाह समारोह आयोजित हुआ। इसमें 227 जोड़े युगऋषि की मंगल प्रेरणाओं को हृदयंगम करते हुए परिणय सूत्र बंधन में बँधे। इस अवसर पर जिलाधिकारी सहित अनेक गणमान्य जनप्रतिनिधियों ने नवविवाहित जोड़ों को उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएँ दीं।

निःशुल्क चिकित्सा शिविर लगाकर सैकड़ों लोगों की सेवा की गई।

युवा प्रकोष्ठ पलिया ने 'दहेज मानव' का नाट्य मंचन किया और योग की आकर्षक प्रस्तुतियाँ दी।

सत्यनारायण व्रत का समापन 51 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ हुआ

पूर्णाहुति यज्ञ में भाग ले रहे श्रद्धालुओं को संबोधित करते शांतिकुंज प्रतिनिधि डॉ. बृजमोहन गौड़

विजयनगरम्। आन्ध्र प्रदेश

25 नवम्बर को विजयनगरम् में कार्तिक पूर्णिमा के उपलक्ष्य में सत्यनारायण व्रत कथा का भव्य आयोजन किया गया। इसमें 300 दम्पत्तियों ने संकल्पपूर्वक सत्यनारायण व्रत कथा का श्रवण किया। समापन वृन्दावन गार्डन फॉर्म हाउस में आयोजित 51 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ हुआ। इस अवसर पर कथा श्रवण करने वाले सभी दम्पतियों ने गायत्री की दीक्षा ली तथा तेलुगु मासिक पत्रिका 'युगशक्ति गायत्री तेलुगु' के सदस्य बने। यह विराट आयोजन कुसुमन्ची फाउंडेशन, विजयनगरम के प्रमुख श्री कुसुमन्ची सुब्बा राव जी ने आयोजित कराया था, जिसमें पाँच हजार श्रद्धालुओं ने भाग लिया। अधिकांश ने प्रसाद के रूप में युग साहित्य खरीदा।

शांतिकुंज के वरिष्ठ प्रतिनिधि डॉ. बृजमोहन गौड़ की मुख्य उपस्थिति में यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। उन्होंने पूज्य गुरुदेव के विचार प्रस्तुत करते हुए सत्यनारायण व्रत कथा को जीवन में सत्य के अवलम्बन की प्रेरणा देने वाला संकल्प पर्व बताया।

- तेलुगु भाषा में हुई कथा
- 300 दम्पतियों ने कथा सुनी
- सभी ने दीक्षा ली, तेलुगु पत्रिका के सदस्य बने।
- 5000 श्रद्धालुओं ने यज्ञ किया

कार्यक्रम श्री उमेश शर्मा, श्रीमती प्रशांति शर्मा, श्री गणेश पँवार, श्री गणपति जी व श्री महेश साहू की टोली ने सम्पन्न कराया। श्रीमती प्रशान्ति शर्मा ने तेलुगु भाषा में सत्यनारायण जी की कथा सुनाई।

इस आयोजन में गायत्री परिवार विशाखापटनम, श्रीकाकुलम, इच्छापुरम, कुरुपम, सिम्हाचलम, अरकुवेळी आदि शाखाओं की विशेष उपस्थिति रही। संयोजक श्री कुसुमन्ची सुब्बा राव जी ने देवसंस्कृति विश्वविद्यालय के लिए विशेष अनुदान दिया। उन्होंने सभी 300 याजक दम्पतियों को गायत्री तीर्थ-शांतिकुंज के दर्शन कराने का संकल्प भी व्यक्त किया।

नवयुग का प्रज्ञा अभियान हर हृदय को प्रकाश से भर देगा

टीकमगढ़। मध्य प्रदेश

टीकमगढ़ के कुंडेश्वर मंदिर प्रांगण में शक्ति संवर्धन 108 कुण्डीय महायज्ञ शानदार सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। इसकी पूर्णाहुति के अवसर पर यज्ञभाव की प्रेरणाएँ हृदयंगम करते हुए 6000 लोगों ने आहुतियाँ समर्पित कीं। 481 लोगों ने दीक्षा ली, 54 पुंसवन, 120 विद्यारंभ और 7 मुण्डन संस्कार हुए। सैकड़ों लोगों ने अपने घर शक्तिकलश स्थापना, तुलसी स्थापना, वृक्षारोपण और दैनिक बलिवैश्व यज्ञ करने के संकल्प लिये।

दीपयज्ञ के अवसर पर देव संस्कृति विवि. के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी की उपस्थिति विशेष प्रेरणादायक थी। उन्होंने कहा कि गायत्री उपासना का प्रकाश जीवन का अंधकार मिटाकर मनुष्य को उसके जीवन के महान उद्देश्य का स्मरण करायेगा, जिसकी उपेक्षा के कारण ही वह भटका हुआ है, तरह-तरह के संकटों से घिरा हुआ है। उन्होंने कहा कि गायत्री परिवार कलयुग का मत्स्यावतार है। नवयुग का प्रज्ञा अभियान हर व्यक्ति के हृदय को सद्बुद्धि के प्रकाश से भर देगा।

दीपयज्ञ के अवसर पर 21000 दीपों से सजी दीपमालाएँ अंतःकरण में दिव्य उल्लास का संचार करती रहीं।

यह कार्यक्रम शांतिकुंज से पहुँची श्री सुनील शर्मा की टोली ने सम्पन्न कराया। उन्होंने गायत्री और यज्ञ को सुखी जीवन के दो अनिवार्य चरण बताया। उन्होंने कहा कि गायत्री की उपासना व्यक्ति को देवता बनाती है। जहाँ देवता निवास करते हैं, वहाँ यज्ञभाव होता है, अर्थात् सबके हित की और सबके सुख की कामना होती है, वहीं स्वर्ग की सृष्टि होती है।

प्रयागराज कुंभ में निःशुल्क बाँटेंगे एक लाख प्रज्ञा अभियान

आस्था के अनेक रूप हैं। आम जनमानस कुंभ मेले में स्नान, पूजा-पाठ, अनुष्ठान आदि कर पुण्य प्राप्त करने जाते हैं, वहीं गायत्री परिवार के परिजन ज्ञानयज्ञ में अपनी आहुतियाँ अर्पित कर पावन गुरुसत्ता का आशीर्वाद चाहते हैं।

प्रयागराज कुंभ-2019 में गायत्री परिवार करोड़ों रुपये का ज्ञानयज्ञ करेगा, निःशुल्क साहित्य वितरण होगा। प्रयागराज और लखनऊ शाखाओं की माँग पर प्रज्ञा अभियान भी 'विशेषांक' प्रकाशित कर रहा है। 1,00,000 पाक्षिक निःशुल्क बाँटने का उनका संकल्प है। इसमें अब तक डॉ. सुनीत कुमार प्रयागराज (11000), श्री वेदप्रकाश, मुम्बई (11000), श्रीमती रानी सचान लखनऊ (5000), श्री संतोष शर्मा (5000), मोहित, गौरव, राजन रघुवंशी लखनऊ (2100), श्रीमती पूनम श्रीवास्तव लखनऊ (1800), श्रीमती प्रतिभा देवी लखनऊ (1800), श्रीमती पूर्णिमा गुप्ता/श्री प्रवीण कुमार प्रयागराज (1000), श्री प्यारेलाल परिहार आगरा (1000), श्री रामबाबू गुप्ता आगरा (1000), श्री अशोक कुमार मिश्रा पूना (2000), कर्नल महेश दिल्ली (2000) का योगदान होगा।

श्री देवव्रत साहा राय प्रयागराज के विशेष प्रयासों से इस पुण्य प्रयास को शानदार गति मिल रही है। उनके अनुसार जयपुर के श्री दीपक नंदी, लखनऊ की श्रीमती माधुरी पाण्डेय, लखनऊ के अभियंता श्री एल.बी. सिंह का भी इस अभियान में महत्त्वपूर्ण योगदान है।

यदि आप भी पुण्य लाभ लेना चाहते हैं तो संपर्क कीजिए : 9258369413

झारखंड में भी पहुँचा गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ अभियान

डाबरग्राम, देवधर। झारखण्ड

19 नवम्बर को देवधर के बँधाग्राम में एक साथ एक समय में 24 घरों में गायत्री यज्ञ हुए। इससे पूरे गाँव में आध्यात्मिक ऊर्जा और उत्साह का संचार हुआ। सभी ग्रामवासी भावविभोर थे। अभियान से प्रभावित होकर कई लोगों ने दीक्षा के संकल्प लिए। यज्ञ अभियान की सफलता में राधा भारती, सिन्धु देवी, अनिता सिंह आदि बहिनों ने विशेष भूमिका निभाई। श्री अवध किशोर, बिन्देश्वरी राय आदि ने पुरोहित की भूमिका निभाई।

गायत्री चेतना केन्द्र, मोडासा का लोकार्पण

गायत्री माता की प्राण प्रतिष्ठा के साथ हुआ युग सृजेता युवाशक्ति में नई ऊर्जा का संचार

मोडासा, अरवल्ली। गुजरात

जिला मुख्यालय मोडासा के आलीशान आवासीय क्षेत्र मालपुर रोड पर भव्य गायत्री चेतना केन्द्र का निर्माण किया गया है। 25 नवम्बर को युवा शांतिकुंज प्रतिनिधि देसंविवि के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने इसमें गायत्री माता की प्राण प्रतिष्ठा की। प्राण प्रतिष्ठा का भव्य समारोह 3 दिवसीय 51 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ सम्पन्न हुआ।

प्रथम दिन 1100 कलशों सहित 2500 लोगों द्वारा विशाल कलश यात्रा निकाली गई विशाल कलश यात्रा ने पूरे नगर को वासंती ऊर्जा से सराबोर कर दिया। 24 गाँवों से 54 ट्रेक्टर ट्रॉलियों पर सजा कर लाये गये रथ कलश यात्रा का विशेष आकर्षण थे।

मोडासा के मंच पर डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी एवं शांतिकुंज की टोली

यज्ञ में 15000 से अधिक लोगों ने अपनी भावनात्मक आहुतियाँ प्रदान करते हुए विश्व कल्याण के लिए आत्म सुधार और लोकमंगल के लिए अपने योगदान के संकल्प लिये।

प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव एवं यज्ञ का संचालन शांतिकुंज से पहुँची श्री अरुण खंडागले की टोली ने किया। शांतिकुंज प्रतिनिधि पश्चिम जोन प्रभारी श्री दिनेश पटेल, श्री कीर्तन देसाई के मार्गदर्शन ने कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाई। वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री धर्माभाई पटेल, कांतिभाई चौहान, किरीट सोनी, हरेश कंसारा, मुकेश सुराणी आदि की सक्रियता कार्यक्रम की सफलता का आधार थी।

नगर में वासंती ऊर्जा का संचार करती कलश यात्रा

जनमन में आस्थाओं के दीप जलाते डॉ. चिन्मय जी

- 24 नवंबर की सायं डॉ. चिन्मय जी की मुख्य उपस्थिति में आयोजित विराट दीपयज्ञ कार्यक्रम का प्रमुख आकर्षण था। इस अवसर पर उन्होंने जीवन के उत्कर्ष के मार्मिक सूत्र प्रदान किये।
- नवनिर्मित 'पुन्सवन संस्कार' पुस्तक का विमोचन किया गया।
- 1000 लोगों ने व्यसनमुक्ति के संकल्प लिए।
- 400 श्रद्धालुओं ने दीक्षा ली।
- गुरुदेव के जीवन दर्शन, गायत्री परिवार मोडासा की गतिविधियाँ, व्यसनमुक्ति एवं साहित्य प्रदर्शनियों ने जनमानस को खूब प्रभावित किया।

• तरु प्रसाद : 3000 औषधीय गुणों वाले वृक्षों को तरुप्रसाद के रूप में पौध निःशुल्क वितरित किया गया। डॉ. चिन्मय जी ने परिवार के सदस्य की तरह इसे विकसित करने और पर्यावरण संरक्षण में सहयोग दें।

• प्रबुद्ध वर्ग संगोष्ठी : यह गोष्ठी नगरपालिका हॉल में आयोजित हुई। डॉ. चिन्मय जी ने इसे संबोधित किया। उन्हें सुनने के लिए जिला कलेक्टर, मेयर सहित कई गणमान्य-अधिकारी उपस्थित थे।

• भूमिपूजन : मोडासा से 6 कि.मी. दूर गायत्री परिवार को 6 बीघा जमीन प्राप्त हुई है, जिस पर श्रीराम आरण्यक बनाया जा रहा है। डॉ. चिन्मय जी ने इसके लिए भूमिपूजन किया।

सर्व विश्वविद्यालय, गाँधीनगर और देव संस्कृति विश्वविद्याल के बीच एमओयू

मानवीय उत्कृष्टता, योग एवं विज्ञान के क्षेत्र में हुआ एमओयू

देसंविवि के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी एवं सर्व विवि. की निदेशक डॉ. गार्गी राजपरा एम.ओ.यू. का आदान-प्रदान करते हुए

गाँधीनगर। गुजरात

शिक्षा का मूल उद्देश्य मानव जीवन का उत्कर्ष होना चाहिए। यह जीवन को सद्गुणों से विभूषित करने से ही संभव है।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय जी ने गाँधीनगर के सर्व विश्वविद्यालय में आयोजित सभा को संबोधित करते हुए यह संदेश दिया। 'मानवीय उत्कर्ष' विषय पर आयोजित इस व्याख्यान में उन्होंने युवाओं में आये भटकाव के कारण उनमें बढ़ती हताशा-निराशा और सामाजिक अशांति की विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि आध्यात्मिक जीवन शैली ही इसका एकमात्र समाधान है। इस अवसर पर सर्व विवि. के पदाधिकारी, प्राध्यापक एवं लगभग 700 विद्यार्थी सहित गुजराज के जोन प्रभारी श्री अश्विन जानी उपस्थित थे।

इस व्याख्यान के प्रभाव से सर्व विवि. और देसंविवि के बीच एक शैक्षिक अनुबंध हुआ। डॉ. चिन्मय जी एवं सर्व विवि. की निदेशिका डॉ. गार्गी राजपरा ने इस पर हस्ताक्षर किए। तद्नुसार दोनों विवि के प्रोफेसर्स एवं विद्यार्थी संबंधित विषयों पर शोध कार्य एवं अन्य गतिविधियों में परस्पर सहयोग करेंगे।

गायत्री विद्यापीठ, शांतिकुंज का वार्षिकोत्सव

खेल हमारे दैनिक जीवन का अंग होने चाहिए। - श्रद्धेया जीजी, डॉ. साहब

गायत्री विद्यापीठ, शांतिकुंज का दो दिवसीय वार्षिकोत्सव एवं खेल महोत्सव 26 एवं 27 नवम्बर की तारीखों में आयोजि हुआ। इसके समापन सत्र में अभिभावक द्वय श्रद्धेया जीजी एवं श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने उपस्थित रहकर सभी विद्यार्थी-शिक्षकों का उत्साहवर्धन किया।

वार्षिकोत्सव में खेल, कला, प्रदर्शनी, गीत, नाटक जैसे अनेक कार्यक्रमों के माध्यम से बच्चों ने अपनी बहुमुखी प्रतिभा व सामाजिक संवेदनाओं का परिचय दिया। उन्होंने स्वास्थ्य और पर्यावरण, स्वच्छता, गंगा सफाई जैसे अनेक विषयों पर अपनी जागरूकता एवं उनके समाधान के लिए योगदान की उमंग-आकांक्षाओं से अवगत कराया।

श्रद्धेया जीजी-डॉ. साहब ने कहा कि बचपन को खिलने और खुलने का अवसर मिलना ही चाहिए। खेलों से व्यक्तित्व में तन्मयता, उदारता, श्रम, सहकार, संतुलन जैसे सद्गुणों का विकास होता है। खेल हमारे दैनिक जीवन का अंग होने चाहिए।

दो दिनों में अनेक प्रतियोगिताएँ हुईं। शिक्षा समिति की प्रमुख श्रीमती शेफाली पण्ड्या, महिला मण्डल शांतिकुंज की प्रमुख श्रीमती यशोदा शर्मा, प्रधानाचार्य श्री सीताराम सिन्हा आदि ने विजेता बच्चों को पुरस्कार प्रदान किये, उत्साह बढ़ाया। नन्हे बच्चों की तरह-तरह की रेस, निर्मल गंगा पर नाटिका, पर्यावरण संकट की ओर ध्यान आकर्षित करती मौन प्रस्तुति ने सभी को प्रभावित किया।

ज्योति पर्व दीपावली

अमेरिका के दो प्रमुख केन्द्रों पर परस्पर प्रेम और सहकार से छायी दिव्यता

लॉस एंजिल्स। संयुक्त राष्ट्र अमेरिका

गायत्री चेतना केन्द्र लॉस एंजिल्स में 7 नवम्बर को दीपावली पर लक्ष्मी पूजन का कार्यक्रम एक विशाल उत्सव के साथ मनाया गया। इसमें भारतीय समुदाय के 300 लोगों ने बड़ी श्रद्धा के साथ भाग लिया। युग पुरोहितों ने पूरे विधि-विधान के साथ माँ लक्ष्मी, गणेश जी एवं बही खातों का पूजन करते हुए धन को सार्वजनिक सम्पत्ति मानने एवं सबके हित में उसका सदुपयोग करने की प्रेरणा दी।

अगले दिन गोवर्धन पूजा और अन्नकूट पर्व मनाया गया। सभी लोग प्रसाद स्वरूप अपने घरों से तरह-तरह के व्यंजन बनाकर लाये, भगवान को भोग लगाया। इस अवसर पर परम पूज्य गुरुदेव का प्रेरक वाक्य 'अपनी रोटी मिल-बाँटकर खाओ, ताकि तुम्हारे सभी भाई सुखी रह सकें।' को हृदयंगम किया गया।

न्यूजर्सी स्थित गायत्री चेतना केन्द्र में भी दीपावली, गोवर्धन पूजा-अन्नकूट का ऐसा ही भव्य कार्यक्रम आयोजित हुआ। हजारों श्रद्धालुओं ने उत्सव में भाग लिया, अंतःकरण की बुराइयों को मिटाकर पवित्र-ज्योतित जीवन जीने, सामाजिक समरसता और सौहार्द्र बढ़ाने की प्रेरणा हृदयंगम की।

अपने आदर्श श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी के जन्म दिवस पर

अति सामान्य लोगों के बीच प्यार बाँटने निकले 'दिया' के सेवाभावी युवा

मुम्बई। महाराष्ट्र

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी स्नेह, संवेदना और आनंद के सागर हैं। दिया, मुम्बई उन्हीं से अनुप्राणित होकर पीड़ित मानवता की सेवा में अनवरत रूप से सक्रिय है। इसी श्रद्धा और उल्लास के साथ दिया, मुम्बई ने श्रद्धेय का जन्म दिवस-चेतना दिवस (रूप चतुर्दशी) मनाते हुए समाज के गरीबों में प्यार-आनंद का संचार किया।

> पूरी टोली ने एक मत से कहा कि हम लोगों के बीच प्यार बाँटने गये थे, लेकिन उनका प्यार पाकर हम स्वयं ही निहाल हो गये। समाज में इसी प्रेम और संवेदना को जगाने की जरूरत है।

गुरुनानक इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेण्ट साइंसेज़ की विद्यार्थियों की टोली को लेकर गायत्री परिवार की शुचिता शेट्टी एवं गायत्री नायक के संग दो अलग-अलग क्षेत्रों में गए। वे पुलिस, डॉक्टर, नर्स, सुरक्षाकर्मी, ऑटोरिक्शा चालक, फूल बेचने वाले, बूट पॉलिश, चायवाले, माटूँगा रेलवे स्टेशन की महिला कर्मी आदि हर वर्ग के लोगों तक पहुँचे। सभी को प्यार-सहकार के साथ जीवन जीने का संदेश दिया, उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए सामूहिक गायत्री मंत्र का उच्चारण किया, गायत्री साधना का महत्त्व बताया और नियमित जप करने की प्रेरणा दी। इस टीम ने श्रद्धेय डॉ. साहब के जन्म दिवस एवं दिवाली के उपलक्ष्य में सभी लोगों मिठाई खिलाई और सत्साहित्य प्रदान किया।

इसी प्रकार का क्रम लोकमान्य तिलक म्यु. जनरल हॉस्पिटल सायन के स्टाफ और मरीजों-परिचारकों के संग चला।

जनमानस के बीच मिठाई और प्यार बाँटकर चेतना दिवस मनाते मुंबई के युग निर्माणी युवा

गायत्री विद्यापीठ, शांतिकुंज में अनुभवी शिक्षकों की आवश्यकता है

परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी द्वारा स्थापित गायत्री विद्यापीठ, शांतिकुंज, हरिद्वार (सी.बी.एस.ई. से मान्यता प्राप्त सीनियर सेकण्ड्री अंग्रेजी माध्यम विद्यालय) में निम्न पदों हेतु योग्य, प्रशिक्षित एवं अनुभवी शिक्षकों की आवश्यकता है।

S.No.	Designation	Subject	Academic Qualification	Post
1	PGT	English	M.A. (Eng.) B.Ed.	02
2	PGT	Computer Science	MCA/M.Sc.(C.S.)/ B.Tech.(C.S.)	01
3	PGT	Physics	M.Sc.(Physics), B.Ed.	01
4	PGT	Maths	`M.Sc.(Maths), B.Ed.	01
5	TGT	S.St.	**M.A. (Geo./Hist./Pol.Sci.) B.Ed.**	01
6	TGT	Computer	BCA/PGDCA	01
7	TGT	Science	B.Sc., B.Ed.	01
8	Clerk	For CBSE Work		01

यहाँ समयदानी अथवा ब्राह्मणोचित निर्वाह राशि में सेवाएँ देने के इच्छुक शिक्षक, जो मिशनरी भाव से ओतप्रोत हों, अपना आवेदन 31 दिसम्बर 2018 तक पूरे विवरण (Resume) के साथ भेज दें।

संपर्क सूत्र : प्रधानाचार्य, गायत्री विद्यापीठ, शांतिकुंज, हरिद्वार। उत्तराखंड-249411
ई-मेल : gayatrividyapeeth@gmail.com
मोबाइल : 9258369844, 7906597922, 9258369594

अश्वमेध के शक्ति कलश पूजन से साथ आरंभ हुआ मुम्बई मंथन

एक लाख लोगों की दो वर्षीय साधना और दैनिक अंशदान के प्रभाव से अनूठा होगा अश्वमेध गायत्री महायज्ञ, मुम्बई

अश्वमेध महायज्ञ आसुरी प्रवृत्तियों के निष्कासन और सप्रवृत्तियों के अभिवर्धन के लिए किया जाने वाला विशिष्ट प्रयोग है। यह 21 से 26 जनवरी 2021 तक मात्र पाँच-छः दिवसीय कार्यक्रम नहीं है, बल्कि अश्वमेध महायज्ञ आज शक्ति कलश पूजन के साथ ही आरंभ हो रहा है। मुम्बई जैसी मायावी नगरी से आसुरी प्रवृत्तियों के निष्कासन के लिए प्रचण्ड सामूहिक साधना और सघन जनसंपर्क की आवश्यकता होगी। एक लाख लोगों की साधनात्मक भागीदारी, एक रुपया प्रतिदिन के अंशदान और जनजागरण में सहयोग के संकल्प के साथ आयोजित हो रहा यह गायत्री अश्वमेध महायज्ञ अनूठा होगा। अश्वमेध यज्ञ कुण्डों में ही नहीं, जीवन में भी होना चाहिए। घर-घर गायत्री उपासना आरंभ होगी तो मुम्बई ही नहीं, पूरा देश बदल जायेगा।

श्रद्धेय डॉ. साहब ने 24 नवम्बर को मुम्बई से आये लगभग 450 प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए इन शब्दों के साथ उनके समन्वित पुरुषार्थ के सत्परिणामों का बोध कराया। इससे पूर्व प्रातःकाल श्रद्धेया जीजी एवं श्रद्धेय डॉ. साहब ने सभी की उपस्थिति में शक्ति कलश का पूजन करते हुए 24 तीर्थों के जल-रज, मंगल द्रव्य और ऋषियुग्म के शक्ति प्रवाह की प्रतिष्ठा की। इस ऐतिहासिक क्षणों के साक्षी बने महानुभावों

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी मुम्बई से आये युग सृजन सेनानियों का मार्गदर्शन-उत्साहवर्धन करते हुए

में यज्ञ संयोजक श्री मनुभाई पटेल सहित अश्वमेध संयोजक मण्डल के साथ आये अनेक प्रतिष्ठित गणमान्य और जोन प्रभारी प्रतिनिधिगण उपस्थित थे।

शक्ति कलश प्राप्त करने आये कर्मठ कार्यकर्त्ताओं की तीन दिवसीय कार्यशाला सम्पन्न हुई। इसमें उन्हें उनके गुरुत्तर दायित्वों का बोध कराया गया। जनजागरण की विधाओं पर विचार मंथन हुआ, योजनाएँ बनीं, व्यवस्थाओं से संबंधित चर्चाएँ भी हुईं।

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने अश्वमेध महायज्ञ के अनेक अर्थों की चर्चा की, उससे संबंधित भ्रांतियों का निराकरण करते हुए इसे राष्ट्र के नवनिर्माण का एक महान प्रयोग बताया। उन्होंने बताया कि हमारे यज्ञ आकार से नहीं, संस्कार और विचारों की गरिमा की दृष्टि से बड़े होने चाहिए। हमें जन-जन के बीच जाकर प्यार और संवेदनाएँ बाँटनी होंगी।

तीन दिवसीय कार्यशाला में-

श्री शरद पारधी जी ने अश्वमेध के प्रयाज, याज और अनुयाज के विभिन्न चरणों के संदर्भ में चर्चा की।

श्री ओ.पी. शर्मा जी ने सामूहिक साधना महापुरश्चरणों से उत्पन्न ऊर्जा के प्रभावों की जानकारी दी।

श्री शिवप्रसाद मिश्रा जी ने समय, साधन, श्रम के सुनियोजन की योजनाओं पर प्रकाश डाला।

विशिष्ट ध्यानाकर्षण

• अश्वमेध महायज्ञ, मुम्बई की तिथियाँ

21 से 26 जनवरी 2021

• अश्वमेध जीवन में भी हो

श्रद्धेय ने कहा–अश्वमेध महायज्ञ आसुरी प्रवृत्तियों के निष्कासन और सत्प्रवृत्तियों के अभिवर्धन के लिए किया जाने वाला विशिष्ट प्रयोग है। अश्वमेध यज्ञ कुण्डों में ही नहीं, जीवन में भी होना चाहिए।

• प्रयाज के 18 सूत्रीय कार्यक्रम

श्रद्धेय डॉ. साहब ने अपने उद्‌बोधन में प्रयाज के अंतर्गत किए जाने वाले 18 सूत्री कार्यक्रमों की चर्चा विस्तार से की। इसमें

- शक्ति कलश के समक्ष अखण्ड जप,
- नियमित प्रभात फेरी,
- रविवार को सामूहिक अखण्ड जप,
- श्रद्धालुओं का डाटाबेस तैयार करना,
- प्रचार वीडियो तैयार करना,
- यज्ञ के निमित्त बच्चों की गुल्लक स्थापित करना,
- लोगों को सेवाकार्यों से जोड़ना,
- मँहगे वस्त्राभूषणों का त्याग,
- साधनामय सादगीभरा जीवन जीना

जैसे कार्य प्रमुखता से बताये गये।

• 500 साधना केन्द्र

मुम्बई में 500 साधना केन्द्र स्थापित करने का निर्णय लिया गया। वर्तमान में 200 केन्द्र सक्रिय हैं।

• प्रज्ञा अभियान का विशिष्ट संस्करण

अश्वमेध यज्ञ के लिए प्रज्ञा अभियान का विशेष संस्करण प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया। प्रत्येक केन्द्र द्वारा प्रज्ञा अभियान के माध्यम से पूरे मुम्बई में अश्वमेध यज्ञ के प्रचार को गति दी जायेगी।

• गायत्री चेतना केन्द्र की प्राण प्रतिष्ठा

सानपाड़ा, नवी मुम्बई में सात मंजिला गायत्री चेतना केन्द्र बनकर तैयार है। श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी द्वारा दिनांक 13 जनवरी 2019 को इसकी प्राण प्रतिष्ठा होगी। इसके बाद यह अश्वमेध यज्ञ हेतु जनजागरण का केन्द्र होगा।

शांतिकुंज में ट्रस्टी सम्मेलनों की शृंखला आरंभ

- 13 शिविर आयोजित होंगे
- 4 फरवरी 2019 तक चलेगी ट्रस्टियों की शिविर शृंखला

शांतिकुंज में पूरे देश के शक्तिपीठों-प्रज्ञा संस्थानों के ट्रस्टियों की तीन-तीन दिवसीय सत्र शृंखला 28 नवम्बर से आरंभ हो गई। प्रथम शिविर में गुजरात के महेसाणा, पंचमहाल, बड़ौदा, सूरत उपजोनों से आये लगभग 200 ट्रस्टियों ने भाग लिया। यह शिविर शक्तिपीठों को युग चेतना के प्रवाह को सशक्त बनाने के लिए उनके दायित्वों का पुनर्बोध कराने तथा अभिनव नियम-कानूनों से अवगत कराते हुए उनकी प्रामाणिकता, पारदर्शिता, सुव्यवस्था सुनिश्चित करने की दृष्टि से आयोजित किए जा रहे हैं।

श्रद्धेय डॉ. साहब एवं अन्य वक्तागण ट्रस्टियों के प्रथम शिविर को संबोधित करते हुए

प्रथम सत्र को शांतिकुंज के वरिष्ठतम कार्यकर्त्ताओं ने संबोधित किया। श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने प्रज्ञा संस्थानों की आंतरिक एवं बाह्य व्यवस्थाओं की चर्चा की। उन्होंने कहा कि हमारे शक्तिपीठ सामान्य मंदिर नहीं, जनजागरण के केन्द्र हैं। तद्नुसार ही उनका निर्माण भी होना चाहिए। प्रत्येक शक्तिपीठ पर वाचनालय, संस्कार केन्द्र, जनसंपर्क केन्द्र, परिव्राजक आवास की व्यवस्था होनी चाहिए।

श्रद्धेय डॉ. साहब ने अपने उद्‌बोधन में एक लाख ग्रामतीर्थों की स्थापना, एक लाख कार्यकर्त्ताओं का निर्माण, एक लाख वर्ष के सामूहिक समयदान का संचय जैसे राष्ट्रीय लक्ष्य उनके समक्ष रखे। इस क्रम में प्रत्येक शक्तिपीठ द्वारा 24-24 गाँव गोद लेने और उनमें साधना, स्वाध्याय, जनजागरण की गतिविधियाँ आरंभ करने की प्रेरणाएँ दीं।

वरिष्ठ कानूनविद श्री एच.पी. सिंह ने लेखा सम्बंधी नियम एवं विधियों की जानकारी दी, ट्रस्टियों की जिज्ञासा का समाधान किया। आदरणीय श्री वीरेश्वर उपाध्याय जी, शक्तिपीठ प्रकोष्ठ प्रभारी श्री कपिल केसरी जी, श्री कालीचरण शर्मा जी आदि कई वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं ने युग चेतना के विस्तार के लिए विविध विषयों पर ट्रस्टियों का मार्गदर्शन किया। शिविर संयोजन शक्तिपीठ प्रकोष्ठ के श्री दयाशंकर शर्मा एवं साथियों ने किया।

शांतिकुंज में ओडिशा के कार्यकर्त्ताओं के लिए आयोजित हुए विशिष्ट सत्र

दिया की प्रान्तीय गोष्ठी

इस वर्ष के आरम्भ में नागपुर में हुए युग सृजेता सम्मेलन का शानदार प्रभाव पूरे देश की युवा सक्रियता पर देखा जा रहा है। ओडिशा प्रान्त के युवाओं में भी सक्रियता की नई उमंग उभरी है। उसे देखते हुए दीपावली की पूर्व बेला में शांतिकुंज में विशेष प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए गए।

03 से 05 नवंबर तक आयोजित शिविर में 23 जिलों से आये 300 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। शिक्षक, किसान, दुकानदार, वकील, छात्र एवं गृहिणी हर वर्ग के युवा इनमें शामिल थे।

प्रथम सत्र में श्री कालीचरण शर्मा ने युग निर्माण योजना एवं उसमें हमारी भूमिका पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात् के सत्रों में मिशन के रचनात्मक अभियानों की जानकारी और उन्हें क्रियान्वित करने का प्रशिक्षण दिया गया। स्वावलम्बन एवं कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहित करने के लिए देव संस्कृति विश्वविद्यालय के सम्बद्ध प्रकल्पों का भ्रमण कराया गया, जहाँ लोगों ने भरपूर उत्साह दिखाया।

अत्यंत पिछड़े कालाहांडी जिले के एक गाँव में विद्यालय चला रही बहिन रेवती ने गरीब बच्चों के आर्थिक-सांस्कृतिक उत्थान के लिए समयदान का आह्वान किया।

शिविर का समापन श्रद्धेय डॉ साहब एवं श्रद्धेया जीजी के आशीर्वचनों के साथ हुआ। सात युवा मण्डलों का त्वरित गठन हो गया। ओडिशा में प्रान्तीय युवा जागृति शिविर आयोजित करने की माँग आयी।

दो प्रमुख संकल्प

- तीन दिवसीय विचार मंथन के परिणामस्वरूप उत्तर प्रदेश के नशामुक्ति अभियान की तरह ही ओडिशा प्रांत को भी नशामुक्त करने के लिए डेढ़ करोड़ लोगों से हस्ताक्षर करवाने का लक्ष्य रखा गया।
- 2,69,000 वृक्ष लगाने, 170 बाल संस्कार शालाएँ चलाने, 7126 घरों में गायत्री यज्ञ करने, अखण्ड ज्योति/प्रज्ञा अभियान पाक्षिक की सदस्यता बढ़ाने आदि के संकल्प लिए गये।

विशेष सत्र 'व्यसनमुक्त ओडिशा'

15 - 16 नवंबर को 'व्यसनमुक्त ओडिशा' शीर्षक के साथ विशेष शिविर सम्पन्न हुआ, जिसमें लगभग 150 परिजनों ने सहभाग किया। इसमें व्यसन मुक्ति अभियान को गति देने के विविध उपायों पर गहन विचार मंथन हुआ, प्रशिक्षण दिया गया। प्रदर्शनी, वीडियो, रथ यात्रा आदि जनजागरण के माध्यमों पर चर्चा हुई। उल्लेखनीय है कि इन दिनों ओडिशा में चल रही 'व्यसनमुक्त भारत रथ यात्रा' को लोगों का भरपूर समर्थन मिल रहा है।

इस सत्र के लिये पूरे जिले के युवाओं को प्रेरित-प्रोत्साहित करने में सुश्री कुमुदिनी मुदुली, तिलोत्तमा, श्री संतोष जेना आदि ने अग्रदूतों की भूमिका निभाई।

त्रैमासिक युग संगीत प्रशिक्षण शिविर

(केवल भाइयों के लिए)

नया सत्र 1 जनवरी 2019 से

शांतिकुंज में त्रैमासिक युग संगीत प्रशिक्षण सत्र नियमित रूप से चल रहे हैं। इनमें भारतीय संत परम्परा के अनुरूप भक्तिभाव प्रवाहित करने वाले संगीत और युग गायन का प्रशिक्षण दिया जाता है। क्षेत्रीय कार्यक्रमों में संगीत की माँग पूरी करने की दृष्टि से ये शिविर बहुत उपयोगी हैं।

शिविर शृंखला का अगला सत्र 1 जनवरी 2019 से आरंभ होकर 31 मार्च 2019 तक चलेगा। इसमें वे ही भाई भाग ले सकते हैं, जो शांतिकुंज में पहले से एक मासीय युगशिल्पी या परिव्राजक सत्र कर चुके हैं और अपने क्षेत्र, शक्तिपीठ या टोलियों में संगीत के साथ अपना योगदान देते हैं या देना चाहते हैं। जो शक्तिपीठ/शाखाएँ संगीत की दृष्टि से स्वावलम्बी बनना चाहती हैं, वे योग्य परिजनों को इन शिविरों में भेजें।

पूर्व स्वीकृति अवश्य प्राप्त कर लें।

सूचना एवं पूछताछ के लिए शांतिकुंज के संगीत विभाग से संपर्क करें। फोन-01334-260602, 260403, एक्सटेंशन-190

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुंज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) श्रीरामपुरम, गायत्री नगर, शान्तिकुंज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा अंबिका प्रिंटर्स एण्ड बाइंडर्स, 656क देहराखास, पटेल नगर, इंडस्ट्रिअल एरिया, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। **संपादक- वीरेश्वर उपाध्याय**
पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602 फैक्स-(01334) 260866

संपर्क सूत्र :- फोन-9258369725 (प्रातः 10 से सायं 5 बजे तक) email : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार संपादन : news@awgp.in **एवं** news.shantikunj@gmail.com

Publication date: 12.12.2018
Place: Shantikunj, Haridwar.
RNI-NO.38653/ 80
Postel R.No.
UA/DO/DDN/ 16 / 2018-20
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2018-20